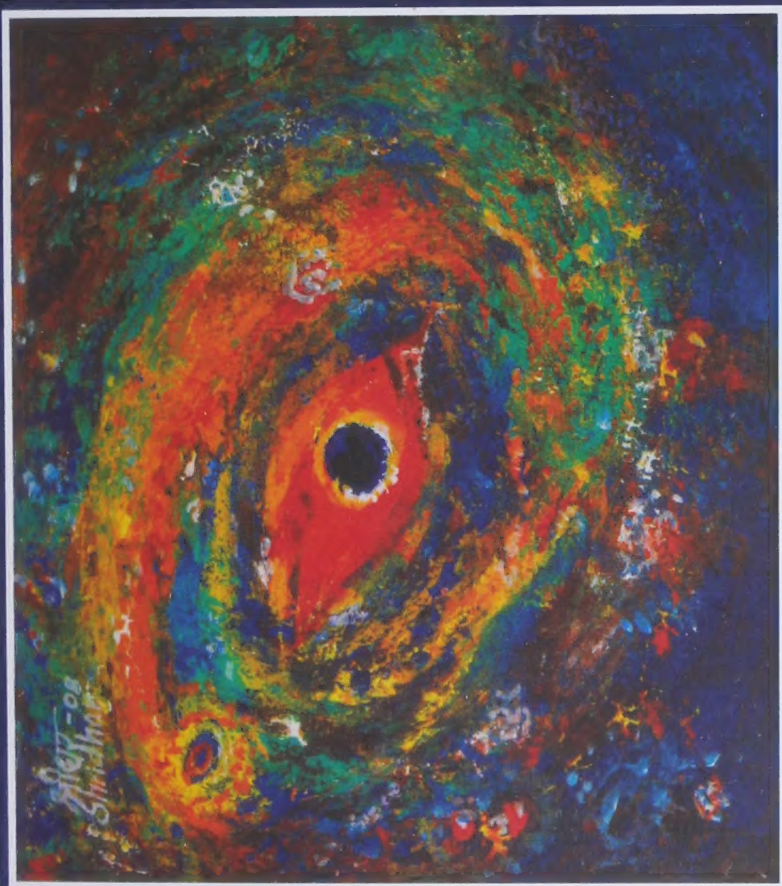
चिरंतन ब्रह्मांड-योगी

प्रकाश पाडगांवकार



कोंकणी से हिन्दी अनुवाद

डॉ. एल. सुनीता बाय

चिरंतन ब्रह्मांड-योगी

प्रकाश पाडगांवकार

कोंकणी से हिन्दी अनुवाद

डॉ. एल. सुनीता बाय



ISBN : 978-81-932594-0-5

चिरंतन ब्रह्मांड–योगी | CHIRANTAN BRAHMAND-YOGI

(कविता संग्रह) | (A Collection of Poems in Konkani)

मूल लेखक : प्रकाश पाडगांवकार | by : Prakash Padgaonkar

अनुवाद : डॉ. एल. सुनीता बाय | Translation : Dr. L. Sunita Bai

प्रकाशन क्र. : 05 | Publication No. : 05

प्रथम संस्करण : 2019 | First Edition : 2019

प्रकाशक | Publisher :
सृजन–विश्व प्रकाशन | Srujan-Vishwa Prakashan
मातृकलश, एम–16 | Matrukalash, M-16,
हाऊसिंग बोर्ड कोलनी, आल्त पर्वरी | Housing Board Colony,
बार्देश – गोवा – 403521 | Alto-Porvoirm, Bardez-Goa 403 521

छपाई : | Printer :
इंप्रेशन्स, बेलगावी | Impressions, Belgavi

मुखचित्र : | Cover Design :
श्रीधर कामत बांबोळकार | Shridhar Kamat Bambolkar

मोल : ₹ 200/– | Price : ₹ 200/-

ISBN : 978-81-932594-0-5

वर्षों के पहाड़ खोदनेवाले
तुम्हारे हाथ सृजन के
तुम्हारी दृष्टि पड़ती है जहाँ
काल वहाँ जड़ें जमाता है

पृथ्वी की सृजनात्मा
तुमसे मिलकर पाती है सार्थकता

मेरी सहचारिणी संजीवी को

विषय सूची

- हिंदी अनुवाद के संबंध में – **डॉ. एल. सुनीता बाय** 7–8
- मन की बात – **प्रकाश पाडगांवकर** 9–10
- कवि प्रकाश पाडगांवकर का ब्रह्मांड-योग
  – **डॉ. एस. एस. कुलकर्णी** 11–19

1. प्रार्थना 21
2. चिरंतन ब्रह्मांड–योगी 22
3. ईश्वरसूक्त 23–26
4. मैं कौन हूँ ? 27–28
5. प्रकृति स्वरूपा 29
6. ईश्वरानुग्रह का ज्ञानोदय 30
7. ईश्वररूपी समपार्श्व 31
8. अनादि अगम्य परतत्व 32
9. मन–ब्रह्मांड 33
10. मेरा परिचय 34
11. मैं हूँ सनातन मनुष्य 35
12. मेरा जीवन सनातन यात्रा 36
13. ऐसा यह कौन है ? 37
14. दिव्य विचार 38
15. अंधकार और प्रकाश 39
16. विचारों का दीपक 41
17. जाति–माहात्म्य 42–43
18. कुरुक्षेत्र 44
19. चन्द्र–पूर्णिमा का महोत्सव 45
20. दूरबीन 46
21. प्रकृति का कैन्वस 47

22. ध्यान 48
23. पालखी 49
24. निशानी 50
25. देवमनुष्य 51
26. प्रज्ञावान मन 52
27. पृथ्वी-पुराण 53-54
28. पृथ्वी हवा में तैरती है 55
29. आतंकवाद का कुत्ता 56
30. गाय और बछड़ा 57
31. कृपानिधान ईश्वर की किरण 58
32. नमन 59
33. पृथ्वी कम्प्यूटर 60
34. मेरा वचन 61
35. अजब की घड़ी 62
36. बांबोळिम का क्रूस 63
37. पंचमहाभूत 64
38. कृष्णब्रह्म 65
39. जागृत देव 66
40. मैं खोज करता हूँ 67-68
41. दहलानेवाले पूर्वाभास दृष्टांत :
11 सितंबर 2001 की प्रतिध्वनि 69
42. ईसा मसीह 70
43. मैं यात्री 71
44. ब्रह्म-निर्माता के नाम 72
45. 15 अगस्त 1947 की निशानी 73-76
46. मुहम्मद अली जिन्ना 77-78
47. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी 79

48. शणै गोंयबाब निर्जन रात में अकेले 80
49. शणै गोंयबाब तत्वनिष्ठ 'एकलव्य' 81-82
50. कोंकणी-भाषा-मन्दिर 83
51. नागदेव 84-85
52. देखते देखते 86
53. मछली की टंकी 87
54. मानव से प्रश्न 88-89
55. मानव-युद्ध 90-91
56. सुनामी लहरों का प्रलय 92
57. निश्चय या निर्धार? 93
58. इसापनीति का कुआँ और मेंढक 94
59. तीर्थस्थान वसुधैव कुटुम्बकम् 95-97
60. ईश्वर से संवाद 98
61. मेरा प्रवास चिरंतन की राह से 99-100
62. मातृत्व की तृप्ति 101
63. हे ईश्वर! तुम्हारा ध्यान करते समय 102
64. शबरि-मला अय्यप्पा 103
65. हे ईश्वर, तुम्हारा प्रेम 104
66. एक ही जन्म से मालूम होता है 105
67. वैभवपूर्ण पृथ्वी 106
68. पीपल का पौधा 107-108
69. अब प्रकाश फैल गया है 109
70. धर्मस्थान मनुष्यत्व का 110-111
71. माँग ब्रह्मांड राजा से 112
- डॉ. एस. एस. कुलकर्णी (1932-2016) की जीवनी-संबंधी सामग्री 113-114
- डॉ. एल. सुनीताबाय (1944-2018) 115

हिंदी अनुवाद के संबंध में

ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो नाम की कोंकणी पुस्तक के मूल रचयिता श्री प्रकाश पाडगांवकार ने यह पुस्तक दार्शनिक दृष्टि से तैयार की है। शांत मन में आत्मा का जो संवाद होता है इसी का वर्णन इन कविताओं में हुआ है। इस ग्रंथ के अनुवाद से भारतीय दर्शन-संबंधी प्रकाश पाडगांवकार की शोधपरक दृष्टि की अभिव्यक्ति कोंकणी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रकट हो जाने की संभावना है। इस कोंकणी कवि की साहित्यिक एवं शोधपरक उपलब्धियाँ प्रशंसनीय हैं। अनुवाद के ज़रिए ये उपलब्धियाँ और भी विस्तार पायेंगी ।

'ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो' का हिंदी अनुवाद 'चिरंतन ब्रह्मांड-योगी' नाम से यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। ब्रह्मांड की सृष्टि का रहस्य जो प्रकाश ने मूल ग्रंथ में अभिव्यक्त किया है, हिंदी अनुवाद में भी जैसे के तैसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। यों तो सभी भारतीय भाषाओं में हिंदी केंद्रीय महत्व की भाषा है। यह भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा है। ऐसी भाषा में कोंकणी के इस कविता संग्रह का अनुवाद निस्संदेह प्रशंसा का कार्य बन सकता है। भारत की संश्लिष्ट भाषिक एवं सामाजिक संरचना में आदान प्रदान के लिए हिंदी ही लोगों की सहायता कर सकती है । इसलिए ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो का हिंदी अनुवाद इस संदर्भ में बड़ा ही महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

'हे ईश्वर, एक ही जन्म से लगता है, कितने ही जन्म मैंने बिताए

तुम्हारी कृपा रही इसलिए मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया'

ईश्वर की कृपा शब्दों में नहीं उतरती यह केवल अनुभव करने की बात है। फिर भी प्रकाश पाडगांवकार ने इसे शब्दों में उतारने का प्रयास किया है। इन कविताओ की यही विशेषता रही है कि इनमें परंपरागत मूल्यों के साथ साथ अधुनातन तकनीकों का भी प्रयोग मिलता है। यहाँ पर अमूर्त को मूर्त बनाने का काम कवि ने किया है।

उन्होंने अपनी विशेष शैली एवं दार्शनिक प्रतीकों के माध्यम से यह किया है। अनुवाद में कहीं कहीं यह कठिन बन गये हैं । फिर भी हिंदी और कोंकणी एक ही परिवार की भाषाएँ होने के नाते इस काम में उतनी कठिनाई महसूस नहीं होती। मूल में कवि ने व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ने का प्रयास किया है। वसुधैव कुटुंबकम् को आधार बनाकर उन्होंने यह कार्य किया है सीधी सादी सरल भाषा में भावों की अभिव्यक्ति होने से अनुवाद प्रभावपूर्ण और आसान बन गया है। हिंदी और कोंकणी की शाब्दिक समानताएँ अनुवाद में सहायक बन कर आई हैं।

ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो, इस कविता-संग्रह का हिंदी अनुवाद करते हुए काव्यास्वादकों को इस कोंकणी पुस्तक एवं उसके रचयिता प्रकाश पाडगांवकार से परिचित कराने में मुझे अत्यंत संतोष हो रहा है। आशा है, मेरे साथ साथ आस्वादक गण भी इसमें संतोष पाएँगे।

डॉ. एल. सुनीता बाय
रिटायेर्ड प्रोफेसर

वृंदावन, काक्कनाड पी ओ
कोची - 682030 (केरल)

मन की बात

ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो -इस संग्रह की कविताएँ मेरे मन का हुंकार रही हैं। मन के शान्त रहने पर मेरा अपनी आत्मा से जो संवाद हुआ है, वही इसमें अंकित है। इन कविताओं के आकार लेते लेते मेरी आँखों में जो कुछ साकार हो रहा था और उसका जो प्रतिबिंब मन पर पड़ रहा था, उसी ने यहाँ पर शब्दों का रूप ग्रहण किया है। इन कविताओं का रचनाकाल 1998 से 2007 तक का है।

एक कविता के सृजन से संबंधित एक घटना बताता हूँ। मैंने अपनी बायीं आँख का आपरेशन 24-05-2004 के दिन कस्तूरबा मेडिकल अस्पताल, उडुपी में करवाया. उस समय आँखों के चारों ओर से संवेदनहीन बनाया गया। केवल आपरेशन के समय आँख के चारों तरफ का हिस्सा दवा देकर सुन्न किया जाता है। जिस आँख का आपरेशन किया जाता है, वही आँख खुली रखी जाती है। इस समय बीच बीच में आँख पर प्रकाश की लहर पडती रहती है। मुझे लगता था कि मेरी सुप्त दृष्टि के सामने कई तरह के दृश्य आ रहे हैं और विश्व-ब्रह्मांड के निर्माण का रहस्य सामने आ रहा था। मुझे लगता था कि मैं हलका फुलका होकर ऊपर ही ऊपर हवा में तैरते हुए अंतरीक्ष में घूम रहा हूँ। और यह सब अनुभव कर रहा हूँ।

बाद में आपरेशन की आँख में दर्द के साथ आँख से झनझनाता कान तक लाल रंग का लाक्षारस इधर उधर बहता सा लग रहा था। उस परिस्थितिमें मेरे अंदर जो खौल रहा था उसे लिखे बिना नहीं जा रहा था। उस समय जो विचार मेरे मन में आए वे आखों के सामने साकार हुए। इस प्रकार 'ईश्वरसूक्त' नाम की कविता सामने आई। ऑपरेशन के बाद मैंने यह कविता उसी रूप में कागज़ पर लिख डाली।

जिसके प्रभाव से हम जीते रहते हैं हमारी आँखों के सामने वह स्वयंसिद्ध चैतन्य से भरपूर विश्व-ब्रह्मांड व्याप्त है। बहुत समय तक वह जीता रहा है और जीता रहेगा। उसके आगे मनुष्य छोटा सा अणु मात्र है... फिर भी मनुष्य ही इसकी गहराई नाप

सकता है, उसके साथ भला बुरा कर सकता है । इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ वैसे ही लिखी गई हैं मानो किसी अज्ञात ने मुझसे लिखवाई हैं। ये कविताएँ जब रूप ले रही थीं तब उन्होंने मुझे असीम आनन्द प्रदान किया है। यही कहना ठीक होगा कि इन कविताओं को अंतर में रखकर मैं जीता रहा।

यह मेरा सातवाँ कविता-संग्रह है। इसे डॉ. एस. एस. कुलकर्णी की पांडित्यपूर्ण प्रस्तावना मिली है। इस समय जब मैं अपने जीवन के पिछले दिनों की ओर मुड़कर देखता हूँ तब मुझे कृतज्ञता के साथ कहना पड़ेगा कि मेरे कार्य शिक्षा आदि के लिए, काव्य-साधना के लिए, प्रज्ञावंत ऋषितुल्य कोमल हृदयवाले मनुष्यों से संबन्ध रखने के कारण ही मैं यहाँ तक पहुँच पाया। अपनी एक कविता का आधार ग्रहण करते हुए मैं, कहना चाहूँगा --

एकाच जल्मान दिसता देवा
कितलेशेच जल्म जियेलों
तुजीच कृपा आसली देखून
हांव खंयच्यान खंय पावलो

(हे ईश्वर ! एक ही जन्म से लगता है कितने ही जन्म मैंने बिताए
तुम्हारी कृपा रही, इसलिए मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया)

– प्रकाश पाडगांवकार

'मातृकलश'
आल्त पर्वरी
15 जनवरी, 2008

कवि प्रकाश पाडगांवकार का ब्रह्मांड-योग

प्रकाश पाडगांवकार की कविता में प्रारंभ से लेकर अंत तक दो महत्वपूर्ण बातें व्यक्त हुई हैं। पहली प्रकाश को लेकर उनकी विशेष इच्छा और दूसरी इस इच्छा के बराबर काव्य-व्यक्तित्व का आध्यात्मीकरण। इसके अतिरिक्त 'प्रकाश' और 'पदचिह्न' दोनों में बडी ही सांकेतिकता रही है, इसके बारे में हम जानते हैं। 'प्रकाश' 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' वाले तत्व को व्यक्त करता है। 'पदचिह्न' एक पूर्वनिर्धारित गन्तव्य स्थान की ओर कवि के जीवन के यात्रा का संकेत दिखाता है। यात्रा का सांकेतिक संदर्भ हमें और एक महावाक्य की याद दिलाता है। वह है - 'उत्तिष्ठत, जागृत, प्राप्य वरान्निबोधत।' इस यात्रा से मतलब 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' है जिसकी ज्योति की ओर कवि ने पैर आगे बढाने की शुरूआत की। उनका पहला संग्रह -'प्रकाश के पदचिह्न'(उजवाडाचीं पावलां) इस इच्छा का मूल माना जा सकता है। इसमें उनकी पहली कविता के उद्गार देखिए -

उजवाडाचें पावल म्हजें काळखा सोपण चडटलें
येवं तुफान जावं मोड सहजकायेन परतितलें
(प्रकाश का कदम मेरा अंधकार के सोपान को लांघेगा
आए तूफान या आँधी सहजता उसे भगायेगा।

'ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो' इस संग्रह में ऊपर दिए गए दोनों कार्य हर एक कविता में अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई पडते हैं। .

'उजवाडाचीं पावलां' इस संग्रह की प्रशंसा करते हुए 1975 में बाकीबाब जैसे दिग्गज विद्वान ने इस प्रकार लिखा है - 'पाडगांवकार में प्रतिभा तो है, विशेषत: आनंद की बात यह है कि उसे हमेशा प्रकाश का ध्यान रहता है। उनके लेखन का यह प्रकाश हमारी हाड मांस की आँखों से नहीं देखा जा सकता, वह प्रकाश नहीं है, लेकिन प्रकाश एवं अंधकार, जीवन और मरण, प्रेम और व्यथा, सुख एवं दु:ख, ज्ञान और अज्ञान, प्रकृति और उसका ऋतुचक्र, वस्तुओं के आकार प्रकार और उनका

स्पन्दन एवं विकार, इन सब की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय जिसके कारण चलता रहता है, वही सनातन प्रकाश है। इस प्रकाश का अर्थ ही सत् चित् आनन्द ...... इस प्रकाश को देखनेवाली आँखों की दृष्टि मंद नहीं पडती। उनकी दृष्टि शुद्ध रहती है और उसको प्रकृति एवं जीवन के रहस्य का सहज अनुभव होता रहता है ..... प्रकाश का ध्यान करनेवाले इस कवि को अपनी कविताएँ लिखने में एक पन्ना नहीं, बहुत से पृष्ठ लग जाएँगे। उनका प्रभाव एक ही पीढी पर न रहकर अनेक पीढियों पर पडे बिना नहीं रहेगा, यही मेरा विचार है।'

उनका दूसरा संग्रह 'वास्कोयन' है। इस संग्रह की कविताओं के ज़रिए 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' वाली यात्रा चलती ही रही है। अंधकारसंबंधी जो तिरस्कार कवि के मन में है उसकी सूचना मिलती है। उसी प्रकार वास्को शहर कितने अंधकार में पड़ा हुआ है, इसका कवि वर्णन करते हैं।

'हांव मनीस अश्वत्थामो' में भी उनके 'गन्तव्य स्थान' का बोध अश्वत्थामा के संकेतों के द्वारा व्यक्त होता है। यह शोध नकारात्मक होने के कारण कवि के मन को तनिक भी अच्छा नहीं लगता। अश्वत्थामा की बुरी दशा अच्छी नहीं लगती। उस अवस्था से उसका उद्धार करते हुए 'असतो मा सद्गमय' तक पहुँचाना है। इस ग्रंथ के नाम की कविता में यह 'गन्तव्य स्थान' छिपा हुआ है। अन्य कविताओं द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है।

'कविता : काळ रेल्वेच्यो, मन हारशांच्यो, पावसा पाण्यांच्यो' वाले संग्रह की कविताएँ सांकेतिक प्रतीकों में बोलती हैं। ऐसा लगता है कि अपनी इस यात्रा में कवि को कुछ छिपाकर रखने की आवश्यकता नहीं है।

पाडगांवकार के अगले संग्रह - 'सर्ग घडपाक धतरिचो' में कवि को अपने गन्तव्य स्थान एवं वहाँ पहुँचने का कारण, उछलकर सामने आने जैसा लगता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत संग्रह की कविताओं की अव्याहत खोज़ का पता चलता है। यह खोज़ इच्छा की ओर जानेवाली है जो कवि की अभीप्सा को पूर्णत: व्यक्त करती है।

'व्हांवती न्हंय काळाची' वाले संग्रह में कवि की खोज़यात्रा बहनेवाली नदी के जैसी दिखाई पडती है। फिर भी उनका 'गन्तव्य स्थान' और वहाँ तक पहुँचने की राह आज भी अव्यक्त रही है, फिर भी वे इन बातों का आभास दिखाते रहते हैं।

'ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो' - इस संग्रह में कवि प्रकाश पाडगांवकार का उनकी यात्रा के संदर्भ में 'अमृत' की ओर पहुँचने का स्थान और वहाँ तक जाने का कारण दोनों अपने आप व्यक्त हो जाते हैं। यहां पर इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक

है कि उनकी यात्रा 'उजवाडाचीं पावलां' संग्रह को लेकर शुरू हुई। उसी प्रकार विशेषत: इसका प्रमाण भी मिलता है कि आध्यात्मीकरण भी प्रारंभ से ही कवि की कवितायात्रा के साथ शुरू हुआ।

यह आध्यात्मीकरण महापुरुष एवं योगी श्री अरविन्द के चिन्तन एवं दृष्टि के अनुसार करने का सफल प्रयास कवि ने इस संग्रह से किया है। कवि का यह मार्ग अत्यन्त कठिन रहा है। कारण यही कि महर्षि श्री अरविन्द के चिन्तन एवं दृष्टि का आविष्करण बहुत कठिन है। क्योंकि यह अंग्रेज़ी में है।

फिर भी मुझे लगता है प्रकाशजीने इस महान कार्य को कोंकणी के माध्यम से, इसी काव्य संग्रह द्वारा करने की शुरूआत की है। और एक बात। उसे मेरे मन में छिपाये रखने की थोड़ी भी इच्छा न रहने के कारण उसका भी उल्लेख किया जा रहा है। बात यह है कि महासंत श्री ज्ञानेश्वर के द्वारा भगवद्गीता से संबधित जो भी सरल एवं शोभित मार्ग दिखाया गया उसी का प्रकाश पाडगांवकार ने इस संग्रह के ज़रिए अरविन्द की तत्वप्रणाली व्यक्त करने का प्रयत्न किया। इसके प्रमाण पूरे संग्रह में मिलते हैं।

इस संग्रह की समस्त कविताओं को 'श्रीकार' एवं 'ॐकार' कहना ठीक होगा जैसे-

इस संग्रह की पहली कविता 'विश्वब्रह्मांड रचणाऱ्याची'(विश्वब्रह्मांड रचनेवाले) की प्रार्थना है। यह कविता अपने सारांश में पूरे संग्रह का रहस्यात्मक अर्थ (जिसे हम 'वागर्थप्रतिपत्ति' का संकेत देंगे) स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है। यहाँ पर प्रार्थना करनेवाला मनुष्य कवि मात्र नहीं, परन्तु मनुष्यकुल का प्रतिनिधि या प्रतिबिंब रहा है। उसको, हर मनुष्य को 'ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो' (चिरंतन ब्रह्मांड योगी) के रूप में बदलने की इच्छा वे करते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के लिए वे कहते हैं --

विश्व ब्रह्मांड रचणाऱ्या तुजें उजवाडाचें ध्यान
चित्त प्रज्ञेन पर्जळावन । भर जीण उत्कर्षान
(विश्वब्रह्माड के रचयिता तुम्हारे प्रकाश का ध्यान
चित्तप्रज्ञा से प्रज्वलित करते हुए जीवन में उत्कर्ष भर दो।)

कवि विश्वब्रह्मांड के रचयिता उस भगवंत का वर्णन करते हैं। तो वह प्रकाश का उत्सव है, वही उत्पत्ति, स्थिति, लय बनाता रहता है। उसी प्रकार उस ब्रह्मांड-रचयिता का प्रकाश और हमारे अन्दर का प्रकाश एक ही है। ये दोनों जब मिल जाते हैं तब बीच का अन्तर मिट जाता है । आगे के शब्दों में देखिए -

विश्व ब्रह्मांड रचणाऱ्या । ज्योत तुजीच म्हजे भितर
ज्योत ज्योतीक भेट्टकच । आमचे मदलें सरता अंतर
(विश्वब्रह्माड के रचयिता मेरे अंदर तेरी ज्योति
जोत जोत से मिल जाती है बीच का अंतर मिट जाता है)

यहाँ पर 'विश्वब्रह्मांड के रचयिता' वही चिरंतन ब्रह्मांड-योगी रहा है। वह कवि के भीतर है वैसे ही सबके भीतर है। इस प्रकार वह 'योगी' सब लोगों के भीतर रहनेवाला मनुष्य 'विश्वब्रह्मांड रचयिता' है। कवि कहते हैं-

हांव ब्रह्म-बीज रुजतां । काळाक भितर उबयतां
सृजन अभीप्से प्रक्रियेक । रसगंधायता
(मैं ब्रह्मबीज अंकुरता काल को अंदर सेता
सृजन-अभीप्सा की प्रक्रिया रसगंधयुक्त करता)

आगे के अर्थपूर्ण शब्दों से महर्षि श्री अरविन्द की महान तत्वप्रणाली की अभिव्यक्ति हुई है।

हांव प्रयोगी परार्धांचो । ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो
नव निर्मणे उत्क्रात पर्वां । साक्षात्कारायतां
म्हजो किरणोत्सवी वसो । पडबिंबता प्राणा हारसो
अदृष्ट हांव, अजरंवराची । ऋचा जियेतां
(मैं प्रयोगी परार्धों का चिरन्तन ब्रह्मांड-योगी
साक्षात्कार करता हूँ नवनिर्माण के उत्पत्ति-पर्वों का
मेरा किरणोत्सवी पक्ष प्रतिबिंबित है प्राणों के दर्पण में
नियति हूँ मैं, उस अनश्वर की ऋचा में जीवित रहता हूँ)

'यह' तो हर व्यक्ति के मन में ब्रह्मांड का रूप बनकर रहता है। अर्थात् वही 'ईश' वा 'ईश्वर' है। 'ईशोपनिषद' में उसका वर्णन इस प्रकार है-

'ईशाव स्यनि दं सर्वं इत्किंच जगत्यां जगत्'

यही संदेश इस कविता-संग्रह की हर एक कविता में सार्थक बनकर आया है। उदाहरण के लिए 'ईश्वरसूक्त' कविता को देखें। कवि ईश्वर से कहते हैं-

ईश्वरा, तुवें तुजे इत्सेन घडयलो महास्फोट
आनी निर्मिलें विश्व-ब्रह्मांड
ह्या स्फोटा वरवीं ईश्वरा
तुजेच जीवसाणीचें अस्तित्व शिंपडून

तुवें प्रसयलें चैतन्य
व्यापीत अंतराळ अनंत तत्व सगळे वाटेन
सादयता ऊँकार ध्वनी ऊँ... ,ऊँ.... ,ऊँ
(हे ईश्वर, तुमने अपनी इच्छा से महास्फोट का
और विश्व-ब्रह्मांड का किया निर्माण
हे ईश्वर, इस महास्फोट के ज़रिए
तुम्हारे ही प्राणों का अस्तित्व सींचकर
तुमने किया चैतन्य का प्रसार
जो अंतरीक्ष में व्याप्त है सभी ओर से अनंत तत्व बनकर
ॐकार ध्वनि के साथ ॐ... ॐ...ॐ)

हमने देखा कि पाडगांवकार हर एक कविता में ब्रह्मांड-बीज का वर्णन करते हैं। 'ब्रह्मांड-बीज' बीजमंत्र से बढकर विशाल रहता है और आध्यात्मिक अर्थ में परिपूर्ण। उसी तरह कवि यहाँ पर हमें उस Big Bang का आध्यात्मिक अर्थ कहता है जिसकी खबर हमको है। जैसे कि विज्ञान कहता है, वह महास्फोट हुआ 'अणु' से भी छोटे कण से पूरी सृष्टि का निर्माण हुआ और उसका आरंभ वायु के रूप में हुआ। वायु के साथ प्रकाश का निर्माण हुआ । फिर पानी की सृष्टि हुई। पानी के साथ पृथ्वी का निर्माण हुआ। उसी पृथ्वी के भीतर 'जीवतत्व' उत्पन्न हुआ। इस प्रकार वायु प्रवाहित होने लगा और घन रूप से सृष्टि के निर्माण का विकास होने लगा। यह सब हमको विज्ञान बताता है। यह 'गूढार्थ गूढतम्' ज्ञान इस संग्रह में स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। इस प्रकार बड़े रूप को लेकर, चराचर प्राणी और उसी प्रकार, चिंतन करनेवाले मनुष्य का निर्माण हुआ। यही सत्य 'हांव मनीस सनातन' कविता में कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है । कवि कहता है --

सासणा खातीर निर्मणेचो क्रम चलपी
हांव मनीस
(स्थायित्व के लिए निर्माण-क्रम चलानेवाला
मैं हूँ मनुष्य)

ब्रह्मांड की रचना करनेवाले ईश्वर तो हैं ही। फिर उनके ब्रह्मांड रचने के पीछे जो दृष्टि रही, कवि उसे जानना चाहते हैं। इसके लिए वे कहते हैं -

खणटा जीव-जिवावळ संस्कृती उत्थानाची
बुनयाद

सांसपीत अश्मयुगाच्या अस्तित्वतायेचीं मुळां
झंकारायत ध्वनी स्तब्धतायेतल्यान
आदी-अंताच्यो शिमो रेशो बालांडून
विश्व-ब्रह्मांड निर्मणेचो,
ताचे निर्मणे फाटलो दिष्टांत हातासपाक
(खोदते हैं जीव-जन्तु संस्कृति के उत्थान की बुनियाद
अश्मयुग के अस्तित्व के मूलों को छूते हुए
झंकृत करती है ध्वनि स्तब्धता से होकर
आदि-अंतों की सीमा-रेखाएँ लाँघती हुई
विश्व-ब्रह्मांड-निर्माण की,
उसके निर्माण के पीछे जो प्रमाण है
उसे हथियाने)

इस मनुष्य का परिचय इस प्रकार मिलता है --

म्हजो वंश सनातन
म्हजो धर्म सनातन
हांव मनीस सनातन
(मेरा वंश सनातन
मेरा धर्म सनातन
मैं हूँ मनुष्य सनातन)

ऐसा ही गूढार्थ 'जीण म्हजी सनातन यात्रा' कविता में व्यक्त होता हैऔर 'मैं कोन हूँ?' यह कविता भी सशक्त रूप से अभिव्यक्त हुई है। 'मैं कौन हूँ?' इसकी खोज हर एक दार्शनिक मनुष्य ने की है। हमारे भारत में इसकी खोज एवं स्पष्टीकरण वेद, उपनिषद्, धर्मसूत्र, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता आदि के समय हुआ और तब से लेकर यह शोध-कार्य चलता रहा है। हाल ही में रमण महर्षि ने यही खोज़ को आगे बढाया है। 'हांव कोण?' कविता में कवि को 'मैं कौन हूँ' इसकी जानकारी मिलती है। वह कहता है -

हांव जेन्ना जालों
एकरूप ह्या हारशांतल्या मनशाभितर
तेन्ना लागलों विरगळपाक चराचरांत
अणुरेणूंचे सूक्ष्मतायेन

सगळें म्हजे भितर आसपावन घेत
आनी हे अवस्तेंत
जेन्ना हांवें पळयलो म्हाका
म्हज्या अस्तित्वरूपी काळजाच्या
हारशांत 'देवा म्हज्या'
तेन्नाच म्हाका जाली म्हजी खरी वळख
आनी कळ्ळें 'हांव कोण' तें
(मैं जब हो गया
एकरूप दर्पण के इस मनुष्य से
तब चराचर में हो गया विलय
अणुरेणु की सूक्ष्मता
सब कुछ मेरे ही भीतर
अन्तर्विष्ट करते हुए
इस अवस्था में
जब मैंने अपने को देखा
मेरे अस्तित्वरूपी कलेजे के दर्पण में
'मेरे ईश्वर'
तभी मुझको हुआ भान आप ही का
और मैं जान गया कि 'मैं कौन हूँ')

इस प्रकार कवि हमको सूचना देता है कि हम और ब्रह्मांड अलग अलग नहीं हैं। प्रस्तुत कविता–संग्रह के नाम को लेकर कवि अधिकत: इसी सूचना को देने का प्रयास करता है। इसका 'चिरंतन' शब्द इस दृष्टि से बहुत ही महत्व का रहा है।

संक्षेप में कहा जाय तो महापुरुष महर्षि श्री अरविन्द की जो दार्शनिक सिद्धान्त तत्वप्रणाली हज़ार हज़ार पृष्ठों के ग्रंथों में वर्णित है, वही सृष्टि एवं उसके विकास का रहस्य कवि पाडगांवकार ने हमको अपनी सीधी सादी सरल भाषा कोंकणी में प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। हम जानते हैं कि ऐसा महान कार्य बडे ही श्रेष्ठ महात्माओं ने भी किया है। कठिन समझी जानेवाली भगवद्गीता एवं उसमें अभिव्यक्त दार्शनिक सिद्धान्तों को संत महापुरुष ज्ञानदेव ने ज्ञानेश्वरी में सीधे सरल शब्दों में व्याख्या करते हुए प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार प्रकाश पाडगांवकार का कार्य भी मुझे ऐसा ही लगता है। मुझको यह मालूम है कि मेरा यह कथन किसीको अतिशयोक्ति लगेगा।

प्रार्थना

विश्व ब्रह्मांड रचयिता
ध्यान आपके उजाले का
प्रज्वलित कर के चित्त प्रज्ञा को
भर दो उत्कर्ष जीवन में

विश्व ब्रह्मांड रचयिता
आरंभ अंत से परे आप
बहता रहे कितना ही काल
नित नए नए अविनाशी आप

विश्व ब्रह्मांड रचयिता
यत्र तत्र सर्वत्र उत्सव
आप ही की ज्योति का
उत्पत्ति, स्थिति, लय का

विश्व ब्रह्मांड रचयिता
गति आप ज्ञान-विज्ञान की
काल गर्भ की प्रसव वेदना
अग्रसर सदा उत्क्रांती की ओर

विश्व ब्रह्मांड रचयिता
मेरे भीतर ज्योति आपकी ही
ज्योति ज्योति से मिलते ही
पाट जाती अंतर बीच का

❑❑❑

हे ईश्वर, तुम हो संपूर्ण
छोटे से सूक्ष्म में
वैसे ही विपुल स्थूलता में भी
तुम्हारी लीला अगाध
तुम मनाते हो अनश्वर काल–महोत्सव
ऋतुपर्वों के बदलते हुए वेष में
अखण्डित रूप में पोषित पृथ्वी को गर्भ देकर
रसों और रुचियों का और पकी हुई फसलों का

हे ईश्वर, तुम प्रकट होते हो
शून्य से माताओं के गर्भ में
जन्म लेनेवाले बच्चों के
निष्पाप निष्कपट हास्य रुदन में
हो तुम मुक्तिदाता
वापसी की शून्य यात्रा में
मनुष्यों के लिए
शून्य में जानेवाले मनुष्य के
भ्रमणपथ से लौटकर

हे ईश्वर जब हवा
निर्जीव, सोये हुए
तुम्हारे अन्तरीक्ष के पोले गर्भ में
प्राणवायु के रसायन को मिलाकर तुमने
मंत्र के प्रभाव से उसको
रखा पवित्रता के साथ बहाव में
सदा काल

हे ईश्वर, तुम रात का घोर अन्धकार बनकर
तुम्हारा प्रयाण प्रारंभ करते हो
नक्षत्रों के मोती-माणिक्य से
विकसित करने उष:काल के
मधुरस के फूलों को
जिन पर है चिरंतन काल का अधिष्ठान
मुरझाकर गिरते समय फूलने के आशीर्वाद का

हे ईश्वर, तुम अपनी कार्यकुशलता से
गुरुत्वाकर्षण से अणु-रेणु को तुम्हारे अन्दर रखकर सहेजते हुए
दिखाते हो तुम्हारी करामात
हे ईश्वर तुम पीडित लोगों के जीवदाता हो
वैद्यों की शल्यचिकित्सा के ज़रिए
आवश्यकतानुसार तुम बनते हो निर्माता काल के
नवनिर्माण को जन्म देनेवाले
शास्त्रज्ञ की अगाध उर्वर कल्पना के ज़रिए

हे ईश्वर, तुम निर्मलता का महामंत्र बनकर
प्रयत्न करनेवालों के हाथों में प्रकट होते हो
जो पवित्रता के साथ
प्रयत्न करते हैं दूर करने के लिए
कूडा-करकट, गन्दगी, बदबू, मलमूत्र की दुर्गन्ध

हे ईश्वर, तुम कितने दयाशील हो
और कितना प्रेम करनेवाले हो

उसने कहा :
'अगर ऐसी बात है तो मेरे मित्र
तुम प्रवेश करो मेरे अन्दर
कर लो तुम्हारी जाँच
लो मैं हो गया
पूर्ण रूप से तुम्हारे अधीन'

फिर मैं दर्पण के उस मनुष्य पर
करने लगा जाँच स्वतन्त्र रूप से

आश्चर्य की बात है, मैंने देखा .उस मनुष्य के अंग
अनजानों की तरह करने लगे बर्ताव
खून के नाते को बिलकुल भूलते हुए
भूलकर रक्त के नाते को

फिर जब सजगता से
मै एकरूप हुआ दर्पण के इस मनुष्य से
तब चराचर में हो गया विलय
अणुरेणु की सूक्ष्मता से
सब कुछ मेरे ही भीतर अन्तर्विष्ट करते हुए

इस अवस्था में
जब मैंने अपने को देखा
मेरे अस्तित्वरूपी हृदय के दर्पण में
'मेरे ईश्वर'
तभी पहचान मैं कर पाया अपने आप की
जान गया कि 'मैं कौन हूँ'
❑❑❑

प्रकृति स्वरूपा

मेरे श्वास के लिए वातावरण में जो हवा चलती है
वह आती है विशाल पर्वतों की घाटियों से उन्मुक्त होकर
हरे भरे जंगलों, वनों में टहलती हुई
खुले आकाश के खोखलेपन को स्पर्श करती हुई
यथेष्ट भीगती हुई धूप, चाँदनी, अंधकार के ऋतुओं में

प्यास की अग्नि बुझाने के लिए जो पानी मैं पीता हूँ
वह आता है पर्वतों के माथे से होकर बहते हुए पवित्र दूध जैसा
झरने और नाले के रूप में संगीत के साथ कलकल करके नाचते हुए
रंगों के परिमाण में सूर्यकिरणों की ऋचा को पचाते हुए
अंधकार की चाँदनी में मुक्त-शरीर होकर भयरहित आतुरता से

पंचेन्द्रियों की भूख शान्त करने के लिए मैं खाता हूँ अन्न
उसमें परब्रह्म का सन्देश मेरे खून से नाता जोड़कर
युग युगों का साक्षात्कार बनकर दृष्टि के सामने चलचित्र जैसा मंडराता है
खाता हूँ मैं जो अन्न वह ही प्रसाद पृथ्वी की निर्माण प्रक्रिया का
जिसके सेवन से ही बनता मैं स्रष्टा
प्राणों को जगानेवाली प्रकृति का
□□□

अनादि अगम्य परतत्व

अनादि अगम्य परतत्व से
मुझ तक पहुँची हुई यह
रंग-बिरंगे चमकते हुए दियों की कतार

यह कतार हर एक दिये को
क्रम से जलाते हुए
और पीछे हर एक दिये को
जलाने के लिए तैयार रखकर
खो गयी ऊपर
अनादि अनंत परतत्व में

काल की देहली पर
इन दियों को अखंडित जलाते हुए
सृजन का आश्चर्य दिखानेवाला
यह अनाम कलाकार कौन ?

इन दियों के जीवन की ऊर्जा
मुझ पर बिखेरती है चुम्बकीय किरणें
और मैं हिलकर बनता हूँ
ऊर्जा का सृजन करनेवाला
प्रकृति-सृष्टि का निरन्तर विकास करनेवाला

यह अनाम कलाकार
अनादि अनंत परतत्व से
एक एक करके विकास का दिया जलाकर
प्रस्तुत करता है उत्थान की पहेली
जिसके उत्तर का ज्ञाता सिर्फ वही।
□□□

8152

मन-ब्रह्मांड

ऊँचामन-ब्रह्मांड
गहरा मन-ब्रह्मांड
अमाप मन अनंत
चिरंतन मन चैतन्य

मन घर प्रार्थना का
उसमें लीन है ईश्वर
परब्रह्म की करनी
जिसका नियंता केवल एक

विकास उत्थान के धागे
बुनते वस्त्र जीवन का
पूँजी है यह भाग्य की
जीवन के नए वैभव की

प्रकृति-सृष्टि चराचर जीवंत
उसी की यह कृपा
खुद ही वह खुद का
गवाह... सच्चा गवाह

क्षण क्षण योग-ब्रह्म
देह हो रही उत्तेजित
अब नहीं कोई कमी
भोगूंगा मैं अपने आपको ही
□□□

मेरा परिचय

अनादिकाल से
सवार चक्रपर उत्क्रांति के
वर्तमान के घाट को गढ़ता हुआ
अनंत काल तक व्याप्त
हूँ सनातन जीवात्मा
परिचय मेरा सनातन
इसीलिए कहता हूँ
मैं हूँ मनुष्य सनातन
□□□

मैं हूँ सनातन मनुष्य

स्थायित्व के लिए निर्माण-क्रम चलानेवाला
मैं हूँ मनुष्य
खोदते हैं जीव-जन्तु संस्कृति के उत्थान की बुनियाद
अश्मयुग के अस्तित्व के मूल को छूते हुए
झंकृत करती है ध्वनि स्तब्धता होकर
आदि-अंतों की सीमा-रेखाएँ लाँघती हुई
विश्व-ब्रह्मांड-निर्माण की,
उसके निर्माण के पीछे जो प्रमाण है
उसे प्राप्त करने

मेरे पंचप्राण पारदर्शिता से चमकता
पहचान लेता मैं स्वयं को

मेरा वंश सनातन
मेरा धर्म सनातन
मैं हूँ मनुष्य सनातन
❑❑❑

मेरा जीवन सनातन यात्रा

मैं हूँ मनुष्य सनातन
मेरा जीवन सनातन यात्रा

मैंने अपने को खतम किया
पृथ्वी के सृजन-निर्माण में
घुला दिया है समर्पण के आनन्द-कोष में

संकुचित विचारों का तालाब
सुखाते हुए
शुरू की है तीर्थयात्रा
बाहर और भीतर के
ब्रह्मांड-विस्तार के विकास के लिए

जिसमें सत् चित् आनन्द का
महासागर विस्तृत
जहाँ निर्माण किया हुआ सब कुछ
केवल निर्माण के लिए

मैं हूँ मनुष्य सनातन
मेरा जीवन सनातन यात्रा
❑❑❑

ऐसा यह कौन है ?

प्रकृति-सृष्टि के श्वास उच्छ्वास तुम हो
जीव-जीवाणु में प्राण फूँकनेवाले तुम हो
इस हवा, अदृश्य रचनाकार तुम हो
कहाँ, कैसे निर्माण करते हो ?

तेज को उत्सर्जित करनेवाले
तुम्हीं सूर्य की आत्मा हो
तारों का पुंज चाह करता है
पाने तुम्हारे चुंबन की गरमी

फूलनेवाले ऋतुओं के उडनेवाले पंछी
शरीर पर उनके रंगीली फसल
ज्वार और भाटा डोलते हैं
सजाकर काल के रत्न केशों में

मेरे शरीर की ज्योति बनती है तैलाक्त
करता है कौन बत्ती का समायोजन ?
मैं जानता हूँ ऐसा यह कौन है
जो लगातार मुझे सहला रहा है

❑❑❑

दिव्य विचार

मेरी अन्तरात्मा में पवित्र मंत्रों से विकसित हुए
दिव्य विचार छोड देता हूँ
अन्तरीक्ष की हर परत में
बिना आधार के हवा में रहने के लिए
ट्रान्समिटिंग स्टेशन बनकर

इन विचारों के चैनल
खुला छोड़ता हूँ
जिससे वे हो कार्यान्वित
उन्हें चाहिए वैसे हो प्रसारित
अपने रिमोट कंट्रोल के ज़रिए

अनन्त तत्व के अस्तित्व का ध्यान रखते
मेरी अन्तरात्मा में दीपस्तंभ जैसे
पवित्र मंत्रों से विकसित दिव्य विचार
अन्तरीक्ष की शून्यता में
छोड़ी जानेवाली जीवन्त ध्वनि–लहरियाँ
बनकर झूल रहे हैं ट्रान्समिटींग स्टेशन
❑❑❑

अंधकार और प्रकाश

प्रकाश की किरणें पडती हैं
चिन्तनरूपी समपार्श्व पर चारों ओर से
और अस्तित्व बनता है चमकीला हीरे जैसा
तन मन से होकर लौटते हुए
वज्रकिरणों की वर्षा
दूर करने
अंधकार : चारों ओर का
अंधकार : अपने अन्दर का

संत एवं महंत प्रयत्नशील रहते हैं
जीवन के अंधकार को दूर करने
जो
डरता है सिर्फ उजाले से

अंधकार, अन्दर का हो या बाहर का
अजीब - अनोखा
रहता है घेरे हुए
पारदर्शी फिर भी
होता है विमुक्त
अस्तित्व के अभाव में

अब अंधकार
खुलकर विस्तार पाता है
प्रज्वलित हो शोभित रहता है
प्रकाश के अमर्यादित
रहस्यों को खोलकर

इस अंधकार की अब
नई प्रक्रिया शुरू होती है
उसका अस्तित्व बदलता है
झिलमिल रसायन जैसे
चैतन्य शक्ति के

इन वज्र-किरणों का प्रभाव
क्षण भर में अंधकार को पिघलाते हुए
उसे उत्सर्जित करता है
प्रकाश बहु आयामी प्रज्ञावान
मनों एवं हृदयों को जोड़ने लगता है

उसके साथ
मैं भू पर बिखेरता चलता हूँ
वज्रफूल रंगबिरंगे
मनुष्यता के जीवन-फूल

□□□

विचारों का दीपक

उगनेवाले उदात्त
विचारों का दिया लेकर
मैं चलता रहता हूँ
खुद से निकलकर बाहर
मेरी शिकायत दर्ज करता हूँ

रास्तों पर साश्वत मूल्यों की नीलामी जब होती है
बाजारो में
प्रतिभा के विज्ञापन का सौदा करते समय
नेताओं की हुक्म देने की चिल्लाहट
असहनीय होते ही
करता हूँ मैं प्रज्वलित मेरी समज का दीया

कौन कहता है हमारी संस्कृति का पोषण
करनेवाले महात्माओं के पदचिह्नों का
अनुकरण करने की
और आकाश पर थिगलियाँ लगाने की हमारी आदत है?

उगनेवाले उदात्त विचारों का दीया लेकर
अपने अन्दर मैं संचय करता हूँ
रात की कोख में जन्म लेकर विश्व को प्रज्वलित करनेवाले
प्रकाश के तेजस्वी स्वयंभू-गोलक का
जिस पर विश्वास करती है
जीवन के सभी मार्गों को खोल देने की चाबी
❑❑❑

जाति-माहात्म्य

सूर्य के जैसे स्वयं तेज से प्रकाशमान
विचारों की स्वर्णिम वर्षा की बौछार
एक मनुष्य ने अपना धर्मगुरु स्वयं बनकर
अपनी जाति एवं कुल का संचित किया स्वाभिमान
अभिमान के साथ सीखना है जीना
अपनें और दूसरों को प्रेरणा देकर
करनी है वर्षा समानता की

जाति मनुष्य के द्वारा निर्मित सोपान है
जिसे हर मनुष्य के साथ जोडा जाता हैं

जब मनुष्य ब्रह्मविचारों को पालता है
तब वह बन जाता है ब्राह्मण
संरक्षण के लिए छाती को जब ढाल बनाता है
तब वह बन जाता है क्षत्रिय
जीविका चलाने के लिए लेन देन और बिक्री जब करता है
तब वह बन जाता है वैश्य
वही जब साधारण सा काम करता है
तब वह बन जाता है शूद्र

घर आंगन में झाडू लगाते हुए एवं जूठन साफ करते हुए
वातावरण को जो स्वच्छ बनाता है
तब वह बन जाता है मेहतर
अपने शरीर की मैली चमडी
नहा धोकर पवित्र करता है
तब वह बनता है चमार

खाए हुए अन्न के निपटारे के लिए
अपना पेट, अंतडी

और शरीर के महत्वपूर्ण नवद्वार
अन्तरंग में ब्रह्म जगाने के लिए
शुद्ध एवं पवित्र बनाता है
तब वही मूर्तिमन्त भंगी कहलाता है ।

एक ही मनुष्य-जाति में जहाँ
उसके प्रतिदिन के जीवन में
कई जातियों के रूप में फैले हुए
समाज में, कौन उच्च है और कौन नीच ?
❑❑❑

कुरुक्षेत्र

जन्म-मरण के कुरुक्षेत्र में उदित
कालपुरुष के उत्क्रांतित पदचिह्न
सूचित करते हैं कि मनुष्य जीवन की अन्तिम विजय है

प्रकाशवर्ष के बीज बोते हुए होता सूर्य प्रकाशमान
और देता है आश्वासन
विस्तृत होनेवाले ब्रह्मांड का
❑❑❑

चन्द्र-पूर्णिमा का महोत्सव

चन्द्र-पूर्णिमा का महोत्सव
धरती के वज्रमुखी समपार्श्व में
किरणोत्सवी सृजन-उत्सव
जिसमें मन दिगंत पाता है विस्तार

चन्द्रपूर्णिमा के भार से
आँखों में अलौकिकता का भार
चिंरंतन के मार्ग में प्रवाहित है
शोभित धार आकाश गंगा की
❑❑❑

दूरबीन

लेकर चलता हूँ मैं एक अद्‌भुत दूरबीन
जब चाहूँ
दूर की वस्तुओं को पास
और पास की वस्तुओं को दूर करनेवाला

इस दूरबीन के ज़रिए
देखता हूँ नक्षत्रों और ग्रहों को
समझता हूँ उनकी हालचाल को
क्योंकि वे पृथ्वी के रिश्तेदार हैं

दूरबीन उलटते हुए
हिंस्र जानवरों को
छोटा बना देता हूं
मनुष्यता देता रहता हूँ
उन्हें साथ लेकर चलता हूँ

देखता हूँ दूरबीन के जरिए
बहती नदी काल की
और अदृश्य पैरों से चलनेवाला
ऋतुओं का अनश्वर मेल

सहारे इसी दूरबीन के
मन का समपार्श्व कभी कभी
कर देता है विलीन अस्तित्व ही मेरा
और मैं व्याप्त होता रहता हूँ पूरे ब्रह्मांड भर
❑❑❑

प्रकृति का कैन्वस

नीले आकाश का जाल
वन की हरी क्रांति
आकाश की कोख में हवा
छाँटते हुए शुभ शकुन की ज्योति

प्रकृति का जीवित कैन्वस
रंग लेकर बनता विशाल
किसकी महाकाय छाया
वहां रहती है ? अपनेपन के साथ?

दीप्त हो दिगंत की कतार
पखावज़ के सुर बहने लगे
कृतार्थता की नदी से मिलकर
दोहद जागे महासागर के

ढोल, मृदंग के मिले सुर में
नक्षत्रों की चली पालकी
सूर्यदेव ने बैठकर रथ पर
बोये बीज उजाले के

स्थायित्व के प्रेमपाश से
शुद्धता की बही परत
मुक्त विचार विशाल बनकर
धारा गर्भ एक एक शब्द ने
❑❑❑

ध्यान

नक्षत्रों की नजरों से छोडता हूँ नाव को
खिलनेवाले फूल के साथ नहाता हूँ सुगंध में

ब्रह्मांड की विशालता अन्दर ढेर बनी है
ज्ञानोदय का नया विश्व जन्म लेने लगा

मन के भंवर ने मुक्त होकर अन्दर प्रकाश फैला
सोया है कल का कालखंड छोटे से इक बीज में
❑❑❑

पालखी

मेरा जीवन पका हुआ खेत
शब्द-सृजन आकाश विशाल
बहाकर संपन्नता का संगीत
पृथ्वी को रखता मोहजाल में

मधु की गंध दृष्टि-जहाज़
चारों ओर लहराता है
ऋतुचक्र का सूर्य
लुनाई का उत्सव मनाता है।

जादूई छड़ी जैसी बारीक ऊँगलियाँ
मापती हैं नक्षत्रों की ऊर्जा
सीढ़ियों से अनुभूति की
मापती हैं स्वर्ग की ऊँचाई

अप्सरा का शरीर रात को
प्रकाशित होता है नाच सजाते
आकाश गंगा लहरें मारकर
सजाती है अदृश्य पालखी
❑❑❑

निशानी

घन घोर वर्षा में
छत के सिमेंट कांक्रीट से
पानी रिसता है
यह कैसी निशानी है ?

यह निशानी है विकास की
विनाश के लक्षण दिखाकर
काल को प्रवाहित रखने की
मिट्‌टी को फिर से
जीवन देकर
उत्क्रांति–क्रम चलानेकी ।
❑❑❑

देवमनुष्य

जब जब देवमनुष्य से रास्ते पर भेंट होती है
जाते जाते मंदिर में अकस्मात् भूल जाता हूँ

सादे सात्विक देवमनुष्य धनसंपत्ति की खान
मनुष्यता से भरकर मन अहंकार को गलाता है

बदले में स्नेह का स्रावनित्य अमृत का छिड़काव
खड़ा है वृक्ष की छाया में शब्दों का रत्न-सरोवर

पंचमहाभूतों का अर्क साक्षात् सामने है
मूल्यवान है मनुष्य जीवन विराट ब्रह्मांड में

❑❑❑

प्रज्ञावान मन

आंखों के सामने खुले पडे ब्रह्मांड के द्वार
प्रज्ञावान मन खींचता है अनंतता का दोर

ओंठों के शब्दों को बदलता है आकाश ओंकार में
मेरी प्रतिच्छाया दूर चलती है निराकार की खोज में

शरीर की ऊर्जा, रसनप्रक्रिया मन–ऋतु के फल
बीज बीज में प्रकाश फैलाती बढ़ती हुई जडें

दृष्टि के सामने व्याप्त पड़े प्रकाश–चित्र शाश्वतता के
उगने यही स्तोत्र अनंतकाल के लिए
❑❑❑

पृथ्वी-पुराण

पृथ्वी लगातार सहती है
मानव की कपट-बुद्धि के आघात
मानव की मानवद्वेषी प्रवृत्तियों के

सृजन के विकास का खजाना
बनी पृथ्वी पर
उसांसें भरनेवाले विलाप की चीख
लौट आया
दुःख देनेवाला भयंकर स्फोट

फिर राक्षसी आग का गोला
जीव-जंतुओं का नाश करते हुए
अनंतता के विस्तार में चला
मानव की बर्बरता की छाप लेकर ।

इस भयंकर स्फोट के कंपन
निनादित रहे
अंतरीक्ष की निश्चलता में लौटकर
मानव के मनुष्यत्व को धक्का देने.

इस प्रतिध्वनि से उपजती है
दैवानुग्रह से भरे हुए
शुद्ध विचारों की ओंकारस्वरूप
शांत ध्वनि
जो पृथ्वी के कण कण में भरकर
प्रज्ञा की कोंपल विकसित करती है
प्रकाश के समपार्श्व से

यह बन जायगा शुभलक्षण
एक दिन मनुष्य के खून की बर्बरता
का अन्त हो जायेगा
मानव बनेगा भोक्ता, उद्‌गाता, शांति का
और पृथ्वी पर रहेगा दिव्यता का आवास
मानवता के भावों का ।

❑❑❑

पृथ्वी हवा में तैरती है

हवा में तैरती है पृथ्वी
दम घुटकर है घुमति
खिलौने की तरह मनुष्य
चला उसका नाश करने

मतांध मनुष्य उपजाता है
मतांधों की दुष्टता की फसल
आँखों में छाया संकट
जीभ पर विष का स्राव

देव-धर्म के नाम पर चल रही
पैसों के अहंकार की बाढ़
धन के बल पर बढ़ती है
रोमांच आग की लडाई का

धर्म के ये कपटी दलाल
करते हैं काम शैतान का
देव-धर्म के नाम पर
करते हैं नाश मानव-धर्म का

जीते जागते 'टायम बोंब'
मानव करता मानव पर वार
क्षण भर में बनता है ढेर,
मिट्टी का, युगों के पार, राशियों पर ।

कहाँ गई मानव की वाँछा
उत्कर्ष के विचारों को बोने की
पृथ्वी माँ के गर्भ में
पलना चाहिए नव-अवतार

❑❑❑

आतंकवाद का कुत्ता

संभालो पागल बना है आतंकवाद का कुत्ता
धर्मांधों की हड्डी चबाकर
करते हुए आघात
फैलाता है आतंकवाद

इस कुत्ते को चाहिए मैदान
हरे भरे लहलहाते वन
उसे अनुर्वर करने को
द्वेषभाव के संसर्ग से

रॅबीस जैसा रोग हुआ
इस उत्तेजित कुत्ते को है चाह
पसारना अपने रोगी विचारों को

इस कुत्ते को तो चीर–फाड के है दफनाना
नहीं तो इसका विध्वंसी आधिपत्य
लगा देगा सुरंग
पूरे जीवन को
□□□

गाय और बछड़ा

‘कोई गाय को मारे तो दूसरेने
बछड़े को नहीं मारना चाहिए’
यही बुजुर्गों का कहना है

कोई कुख्यात व्यक्ति बुद्धिहीन होकर
गाय को मार डालता है तो
और दूसरा तुरन्त बछड़े को मारता है
पृथ्वी को खून में सराबोर करता है

एक दूसरे को दूषित करनेवाले
दोनों के संस्कार
एक समान विष की परीक्षा लेनेवाले हैं

मुझे चाहिए रहे जिवित गाय
भय रहित लंबा जीवन
मुझे चाहिए सर्वांगसुन्दर बछड़ा
चिंतामुक्त एवं स्वतंत्र
मुझे चाहिए गाय-गोठ में
आकार पाए इतिहास बंधुत्व का।
❑❑❑

कृपानिधान ईश्वर की किरण

मुझ पर बरस कर आर पार जानेवाला
विकसित नीला पारदर्शक
प्रोटोन, न्यूट्रोन, इलक्ट्रोन, क्ष-किरणों का!
जीव को चलानेवाली विष की किरणें
आश्चर्य है कि आज भी मैं हूँ ज़िंदा

शरीर के अणु रेणु का विघटन करनेवाले
इन शरारती किरणों का मुझ पर नाशकारी आक्रमण
शरीर का पहनावा, आभूषण
इनसे प्रभावित होकर भी
मैं भीतर से नग्न एवं अनावृत हूँ

मुझ पर बरसकर आर पार जानेवाले
शरीर का नमक गलानेवाले किरणों का
फिर भी है इसमें कृपानिधान ईश्वर का प्रकाश
जो देता मुझे रक्षा कवच
मेरे प्राणों के साथ उसका नाता आत्मीयता का
❑❑❑

नमन

मेरे महान कम्प्यूटरीय युग को नमस्कार
जो पृथ्वी पर सृजन, निर्माण का जाल बुनकर
होता जो प्रकट ब्रह्मांड का द्वार खोलकर
होकर उत्क्रांति की राह से
करता यात्रा दिव्यता की ओर
❑❑❑

पृथ्वी कम्प्यूटर

पृथ्वी कम्प्यूटर का अनश्वर अक्षर-पट
और ब्रह्मांड मोनिटर का परदा

मैं कल्पना से कमांड देकर
चैत्य-इंटरनेट को करता हूँ कार्यान्वित
और ले आता हूँ एक दूसरे के पास
जहाँ अमर्यादित ज्ञान के स्तरों की संकल्पनाएँ।

वैसे ही कृष्ण विवर, आकाशगंगा
अन्तरीक्ष की गलियाँ कोनों में चहलकदमी
नया ब्रह्मांड, जीवित तारांगण
ग्रहों के जन्म को अंकित कर
ले आता है संग्रहीत करके
वहाँ के अलौकिक आदेश
विश्व के केंद्रबिंदु के कक्ष में

पृथ्वी कम्प्यूटर का यही है अनश्वर अक्षर-पट
और ब्रह्मांड परदा मोनिटर का
❑❑❑

मेरा वचन

मेरा वचन बीजोंवाला एवं उपजाऊ
पृथ्वी पर अंकुर फूटता है
जीनेवालों की भूख बढ़ाकर
शोध का आकर्षण लाता है।

मेरा वचन नृपादेश
पृथ्वी को उर्जा देता है
बॉंब ॲटम, नायट्रोजन
पोला बनकर होता विलीन
❑❑❑

अजब की घड़ी

अजब की घड़ी सूर्य की कालगति को है अंकित करती
ऋतुओं के भेस में जीवन को है प्रवाहित करती

भूत, भविष्य, वर्तमान है एक दूसरे के सामने
काल नित्य नया ताल लेकर आता है सामने

उत्क्रांति का पंछी चोरी चोरी करता चहलकदमी
उसे है लगन आदि - अंत का पार करना समंदर
❑❑❑

बांबोळिम का क्रूस

हे बांबोळिम के क्रूस
मैं जब जब देखता हूँ तुम्हें और करता हूँ स्मरण
रहते हो खडे तुम अपने आसन पर
हाथी दाँत के शिल्प के जैसे दिखाई पड़ते हो ।
गिरजे के चौक पर
आते जाते रहनेवालों की नज़र
तुम्हारी ओर खींचती है भक्तिभाव से
मेरे ओंठों पर आता है वचन
ऊँ क्रूसाय नम:
ऊँ क्रूसाय नम:

बाद में मैं करने लगता हूँ तुम्हारा ध्यान
तब तुम
तुम्हारे आसन से बाहर आकर
लहरों जैसी टेढ़ी मेढ़ी आकृति लेकर
जा रहे हो तुम
ऊपर अनंत तत्व में
ऐसा लगता है

हे क्रूस बताओ तो ऐसा करते हुए
स्वर्ग के पिता के पास
अपने भक्तों के लिए आशीर्वाद लाने जाते हो?

❑❑❑

पंचमहाभूत

पंचमहाभूत की खान
देह दिव्य ब्रह्मवंशी
ध्येय शाश्वत कर्तृत्व का
आत्मतत्व अविनाशी

मन दिव्य कल्पलक्षी
दर्पण बनकर
अपना रूप है दिखता
श्री हरि के प्रतिबिंब का

पंचमहाभूत की खान
अन्दर अमृत उगता है
जन्म जन्म का पुण्य
जीव जीव को देता है।

पंचमहाभूत का दिया
प्राण के रूप में जलता रहा
दिव्यता की उसकी भूख
बाती जलाये रखता रहा।
❑❑❑

कृष्णब्रह्म

फूल जैसा मुक्त जीव सुख से है हलका
कृष्णब्रह्म आज अन्दर ही अन्दर जगमगाता रहता है

प्राण का दिया जलाकर प्रकाश की रंगोली
वर्षा बनकर आशीर्वाद उगाती है इधर उधर

विनय की ध्वजा लहराती है किसी को नहीं जलन
स्पर्श पाकर ईश्वर का आलिंगन करता है मन ऊंचाइयों का

दिव्य प्रतीक्षा की राह की लडाई हो गई है समाप्त
द्वार खुला पड़ा है हर एक मंजुल धुन की गूँज से

कृष्ण-ब्रह्म अन्दर ही अन्दर फैलाता है प्रकाश
साकार स्वर्ग कृतार्थ बनेगा मधुर फसल से युक्त
❑❑❑

जागृत देव

कौन किसलिए जागृत देव को
बन्द रखता है गर्भगृह में?
कितने युगों तक गर्भगृह में
अन्दर ही अन्दर घुटता है

विश्वरूपी विश्वात्मा ईश्वर की इस
निर्दय सजा का अन्त करेगा कौन?
कलेजे के अन्दर बिठाकर उनको
किसे होगी आशा आत्मसुख की?

हो जाये गांव भर कोलाहल
पुलीस दौड़ी आती है!
कौन किसका निकालेगा
द्वेष, मात्सर्य के काँटे से काँटा?

❑❑❑

मैं खोज करता हूँ

खोज करता हूँ मैं
शुद्ध ब्रह्मस्वरूपी परिपूर्ण सत्पुरुष का
समान है जो सामान्य के,
सामान्य होते हुए भी विचार जिसके अलग हैं
आदि अनादि अनंतता में
जैसे पहले ऋषि के हृदय में
सिद्धि का पहला वेदमंत्र फूटा
प्रकाश-वर्षों के पदचिह्न पड़े
मानवता की बुनियाद डालने

इस सत्पुरुष के गुरुत्वाकर्षण के
मायापाश से उत्तेजित हो
नवनिर्माण करनेवाले
उत्क्रांति की फसल काटने के
उनके विचारों के
घर्षण एवं क्रांति से हुई ग्लानि
बाँझ विचारों को
प्रतिभा की ज्वलंत खाद डालकर
समर्थ विचारों की नई नई फसलें
का हो रुपाकार

ऐसे यह सत्पुरुष महावृक्ष की तरह
सब कहीं फैलकर
चिरंजीवी, अजरंवर मूल विचारोंवाला
जिनके पैरों में बैठते ही
जाति, पंथ, भेस भाषा, देश को
भूल जाता है हर एक व्यक्ति
उसे लगता है जैसे वह स्वयं बैठा है
प्राणवायु को जन्म देनेवाले
चिरस्थायी स्रोत के पास

इस प्रकार दिव्य साक्षात्कार करनेवाले मनुष्य का
अस्तित्व ही सबके लिए बनता है
कृतार्थता का वह जलाशय
हरा जीव जीवन के मार्गपर ले जानेवाला
और कालमंच पर जाता है छाया जैसे नष्ट होनेवाले
मनुष्यजीवन के पद–चिह्नों की
वास्तविकता को पहचानकर
हर मनुष्य कह उठता है :
'आत्मभाव के मनुष्य में ही
साक्षात् ईश्वर का अस्तित्व है'
❑❑❑

दहलानेवाले पूर्वाभास दृष्टांत :

11 सितंबर 2001 की प्रतिध्वनि

मुझे होने लगे हैं दहलानेवाले पूर्वाभास
और खुली आँखों को दिखाता है
मनुष्यहीन वैभव वाले महानगर
उजडे हुए स्थान, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय,
राजमार्ग, जलमार्ग
जहाँ मनुष्य होता था व्यस्त जीवन की स्पर्धा में

मुझे होने लगे हैं दहलानेवाले पूर्वाभास
और धक्का लगता है स्तब्धता का शाप जैसे
जीते रंगों को जन्म देनेवाली
तेज़ प्रकृति बिखराती थी संमोहन
आँखों पर सृजन का
वही गुनेहगार होकर पडी अस्त व्यस्त
शैतानी कर्मों का अत्याचार सहते हुए

मुझे होने लगे हैं दहलानेवाले पूर्वाभास
और दिखने लगते हैं विध्वंस करके छूटते जा रहे
मनुष्य-चक्की के विनाशकारी शाप के
पाताळयंत्री यमदूत
क्षेपणास्त्र, बम-गोले बरसाकर
द्रव्यरूपी हिंस्र जीवाणुओं को छोडते हुए
गला घोंट कर हवा के अमृत का

मुझे होने लगे है दहलानेवाले पूर्वाभास
और सच में इसी प्रकार की घटनाएँ घटती हैं तो
अधर्म को नष्ट करने के लिए अवतार आयेगा
नवनिर्मिति के आविष्कार में
पृथ्वी की रक्षा करने के लिए
जयजयकार करते हुए
विजयी चिरंतन सत्य का

❑❑❑

ईसा मसीह

हे प्रभो येसू! तुम्ही परिमाण हो
गुजरे समय को नापने का
मानवकुल की अधोगति का?

पृथ्वी पर जन्म लेकर
जहाँ रहती थी बर्बरता जंगलीपन की
द्वेष की मनुष्य के रक्त में!

उस विष का नाश करने के लिए
तुमने कार्य किया
इसको एक पवित्र आयाम प्रदान किया
तुम्हारी आध्यात्मिक शिक्षा का!

मानव ने की प्रचुर भौतिक प्रगति
बनाए महानगर, ऊँचे मीनार
जिन्होंने किया मनुष्य के सुख का उद्धार
फिर भी हम भीतर से रह गए
निरर्थक पत्थर?

हज़ारों साल बीत गए
तुम्हें मानवता के क्रूस पर चढ़ाकर
आज भी हम वही मनुष्य रहे
जो एक दूसरे की गर्दन काटते हुए
प्रतिदिन तुम्हें क्रूस पर चढ़ाते हैं!
□□□

मैं यात्री

कालचक्र पर सवार मैं यात्री
जैसे अज्ञात शुन्यता से उत्पन्न
यात्रा समाप्त करते हुए
उसी शून्य में जाने के लिए

कालचक्र पर सवार मैं यात्री
मैं ही ढुंढ रहा मेरा परिचय
थाह न लगती विस्मृति की स्तब्धता में

मैं कालचक्र पर घुडसवार यात्री
जीवन की मिट्‌टी का खेत जोतते हुए
पाता हूँ फसल भाग्य की
कडवी-मीठी

मैं कालचक्र पर सवार यात्री
घुमते घुमते एक दिन उछलकर
गिरुंगा चक्र के बाहर नामोनिशान मिटाकर।
❑❑❑

ब्रह्म-निर्माता के नाम

दिव्य जीवन की बुनियाद रखकर
प्रदान करो प्रज्ञा का पुरस्कार
अडचनों की पहाड़ियों को पिघलाकर
सात्विक रत्नहार को प्रकाशित कर लो

कुटिलता के ग्रहण का अंत कर लो
दुविधाग्रस्त लोगों के प्रश्नों को उड़ा दो
मुक्त हाथों से आशीर्वाद देकर
बहाओ अमृत-सुख के झरने

अंधकार के पर्वों को निष्कासित कर दो
वन वन में शब्द प्रतिध्वनित करके
सहस्र बाणों को चलाकर उत्पन्न करो
उत्कर्ष का सुमंगल घंटानाद

दिव्य जीवन का जीवंत पुरस्कार
विजयमुकुट सबको दे दो
व्यवस्थित हो हर एक व्यक्ति का जीवन
अमूल्य संरक्षण कृतार्थ जीवन का ।

□□□

15 अगस्त 1947 की निशानी

15 अगस्त 1947 एक ऐतिहासिक महत्व का दिन
ध्येय का, निष्ठा का, अधिकार पाने का
यह भारत में स्वतंत्रता का उष:काल ले आया
विश्वरूपी कमल की कोमल पंखुडियों में
सूर्य मानो इंद्रधनुष के रंग बिखराता हो
यह दिन सभी के दिलों में घर किये हुए है।

नवनिर्माण की संकल्पना का आविष्कार करके
इस दिवस ने अंकुरित किया अनश्वर निशान
पृथ्वी के विकास के ज्ञान पर
भारतीय राजसत्ता का अपना अस्तित्व
'सर्वधर्म समभाव' को अपनाकर
संसार को नई दृष्टि प्रदान करने
मानवता के उत्कर्ष की ।

15 अगस्त 1947 की याद तरोताज़ा
कान में गूँजती है चलचित्र जैसे
पंडित जवाहर नेहरू की पुकार :-

बहुत पहले अदृष्ट से किए हुए
समझौते के अनुसार प्रतिज्ञा करते हुए
प्राचीन परंपरा से नवीन युग में
किए गए प्रवेश का
राष्ट्र की संरचना के ध्येय से
विकास के नए देवालयों का निर्माण करके
नचाता है महारथ विकास का
कोटि भारतीयों को विकसित करने की प्रतिज्ञा का
गरीबी को हटाकर, अज्ञान को दूर करने का

समता लाते हुए हर व्यक्ति के आँसुओं को पोंछने का
भविष्य की आशा जगाने का
समस्त राष्ट्र में भावात्मक एकता को स्थापित करने का
मानवता को धैर्य प्रदान करने का ।

15 अगस्त 1947 के दिन की याद
चिन्ता की मुद्रा में आँखों के सामने आती है
शांति, समता अहिंसा का अस्त्र लेकर
युद्ध करनेवाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी !

कलकत्ता के द्वेष के बदले के रूप में हुई
मारकाट, हिन्दू मुसलमान दंगे, आग की लपटें,
खून की नदियाँ बहते समय शांति,
समाधान और समझौते के पर्व
शुरू करने के लिए तैयार होते हुए
दु:खी होकर कहते हैं :-

आज मैं हुआ घायल
हिंदू-मुसलमान के विभाजन से
यहाँ विभाजन मात्र देशों का ही नहीं,
है मेरी देह का भी

इस वितंडावाद का कर लो अंत
भाई भाई के बीच का
क्रोध एवं मात्सर्य का ------
ईश्वर अल्ला तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान ....

उसी प्रकार 15 अगस्त 1947 की
स्फूर्ति प्रदान करनेवाली याद
भारत की प्राचीन संस्कृति के पृष्ठ खुलने लगे
महाभारत, रामायण, गीता, उपनिषद, पुराणों के
कथाएँ आँखों के सामने साकार होती हैं ।
पोणडिच्चेरी के अपने आश्रम में
अध्यात्म के महावृक्ष की चुंबकीय छाया में
ध्यानस्थ बैठे महायोगी श्री अरविंद कहते हैं--

यह जन्मदिन मुक्त भारतवर्ष का
इस दिन में भारत ने
प्राचीन काल को छोड़कर
नए युग का प्रभात शुरू किया
संसार के आगे दिव्य जानकारी रखी
राजकीय, सामाजिक, आध्यात्मिक पर्व का
करते हुए निर्माण
देखा स्वप्न नए इतिहास का!

यह दिवस भविष्य के मूलाधार होकर
निहारता भारत स्वप्न द्रष्टा का
हिंदू मुसलमान को विभाजित करके
देश के हो गए टुकड़े
एक दिन होगा खतम
उर्वर विचारों के धागों से
और 'विखंड भारत' बदलकर
'अखंड भारत' होकर
भावात्मक एकता दिलों में जुड़ जायगी
इस दिन की दूरदर्शिता कृतार्थता की
स्वप्न देखेगा भारत उत्क्रांति का
मनुष्यों की समस्याओं को दूर करके

ऊँचे स्तर पर रखते हुए
मानवजाति के उत्कर्ष के लिए
आध्यात्मिक परिपूर्णता से युक्त
करेगा सृजन नए विश्वसमाज का सृजन
मनुष्यों को सिखाएगा दिव्यवाणी

15 अगस्त 1947 का पुण्य दिवस
राष्ट्रभावना को जागृत करने
दीपस्तंभ जैसी नियति ने
हमारे लिए किया है विकसित।
आती रहेगी याद उसकी हरदम
खून का नाता ज्वलंत करते
शांति एवं एकता से राष्ट्र की संरचना में
अपना अपना हिस्सा प्रदान करने के लिए
कर्तव्य भावना से सोचता है....

देश का महारथ अपनी भुजाओं पर लेकर
देश आगे ले जाते हुए,
हम कहाँ थे ?
कहाँ पहुँच गए ?
हमें कहाँ तक जाना है ?
देश को हमारे कहाँ तक ले जाना है ?
❑❑❑

मुहम्मद अली जिन्ना

मुहम्मद अली जिन्ना
कहा जाता है कि तुम्हारी कल्पना का
पाकिस्तान था...
एक तरह से आधुनिक विकास की
बुनियाद डालनेवाला
पवित्र इस्लामी देश
सभी धर्मों के नागरिकों को
समान दर्जा देनेवाला।

पाकिस्तान के निर्माण के समय
नई शुरूआत जब हुई, सुना है कि
तुमने कहा :- दे‍ा के भिन्न धर्मों के लोग
बिना भेदभाव के सब समान अधिकार में रहते हुए
स्वतंत्र रूप से मन्दिरों में
गुरुद्वारे या
मसज़िदों में जाने के लिए हैं स्वतंत्र
अपने अपने धर्म का पालन करने के लिए,
चाहे वे किसी धर्म के क्यों न हों

देश के विभाजन का घाव ताज़ा बनकर
आज भी कभी कभी होता लहूलुहान
खोजता है एकता का मलहम ।
इस नाश से
दुःखी हो गए दिल
चाहते हैं भाईचारा
फिर से एक होने ।

विभाजन के घाव सहनेवालों के सपने
आज भी घूम रहे आज भी
अनंत में तैरते
समंदर की लहरों पर चक्कर हैं काटते
बीज के गर्भ से
मूर्त रूप पाने ।
❑❑❑

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
तुम युगपुरुष हो, काल के
अमरत्व पर अपनी अनश्वर
मुद्रा छापनेवाले

तुमने नींव डाली
संसार को मिली महत्वपूर्ण देन
सत्य, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव की
मानव मानव के दिलों को जोड़कर
संपूर्ण धर्मों के स्रोत की एकता की।

संसार के किसी भी कोने में
मानव को घायल करने की घटनाएँ
निरंतर करती लहू लुहान
तब कटु अनुभव में भी तुम्हारी शिक्षा
द्वेष, मात्सर्य के संक्रमण को
हटाने की दिखायेगी राह

हे महात्मा तुम्हारे शुद्ध मन में जन्मे
मानवकल्याण के तुम्हारे भाव
काल गर्भ में फूलते फलते रहेंगे
और अनंत में फैलते रहेंगे ।

हे युगपुरुष, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी
काल जब करवट बदलेगा
तो देखेगा
तुम्हारी अनश्वर मुद्रा की छाप।
❑❑❑

शणै गोंयबाब निर्जन रात में अकेले

शणै गोंयबाब तुमने निर्जन रात में अकेले
जलाई गई बाती बंजर भूमि पर
कोंकणी भाषा के मखरले पत्थर पर
सांतेरी देवी को कुमारी मरियम के अनुग्रहार्थ
अवज्ञापूर्ण वनवास भोगनेवाले
कोंकणी बेटे बेटियों को
सत्व एवं स्वत्व की जानकारी देने के लिए।

उस बाती के माध्यम से
प्रकाश की बिजली उत्पन्न हुई
तेजवंत शब्द उत्पन्न होने लगे
चारों दिशाओं को हिलाते हुए
मानव-मनों में संचित
अंधे युग के अंधकार को झटककर
प्रकाश पथ फैलता गया...

बाद में शणै गोंयबाब, अकेले ही
तुम्हारे द्वारा जलाए हुए जागृत पत्थर पर
स्वयं तेज से जलाई गई अपनी बाती
खून के नाते से सशक्त बनाने लगे
जागृत पत्थर अपने आप बन गया गर्भगृह
अपने आप वहाँ खड़ा हुआ
कोंकणी का मंदिर ।
❑❑❑

शणै गोंयबाब तत्वनिष्ठ ‘एकलव्य‘

शणै तुम अकेले तत्वनिष्ठ ‘एकलव्य’ हो
तुमने ‘अंगूठा’ दान में माँगनेवाले,
अधिकार दिखानेवाले ‘द्रोणाचार्य’ को
आह्वान देकर लौटाया
और सिरपर सवार ‘अर्जुन’ को
खरे ‘धनुर्धर’ बनकर उसे अपनी जगह दिखा कर
सींचा ‘कोंकणी संसार’।

शणै, उस समय तुमने अपना ‘अंगूठा’
एकलव्य की तरह बलि देकर
कपटी ’द्रोणाचार्य’ को दान में दिया होता तो?
गोवा के आसपास की सीमाएँ
कभी की विलय हो जातीं
और चिरस्थायी बन जाता
हमारा जीवन स्वत्वशुन्य परावलंबी...

शणै, आज भी कपटी ‘द्रोणाचार्यों’को
छोटी मछलियों पर दृष्टि रखते हुए
तुम्हारी खिल्ली उडाते हुए
‘अंगूठा’ माँगने की सोचेंगे
उस समय स्वाभिमान हमारा
अंगारों से बनता मशाल
प्रज्वलित होती देह हमारी।

शणै, साथ तुम्हारा लाया रंग
हाथ हमारे बने मुठ्ठी
आत्मनिर्भरता का अँगूठा
ललकार का सामना करते
रखता सुरक्षित ज्ञान की सान पर
हमारा आत्मसम्मान
सींचकर तुमने तैयार किया 'कोंकणी संसार'

❑❑❑

सूचना :
शणै गोंयबाब अर्थात वामन वर्दे वालावलीकार जिन्हे कोंकणी आधुनिक साहित्य का जनक कहा जाता है। उन्होंने अलग अलग साहित्यीक विधांवोंमें कोंकणी लेखन किया। सन 1940 के दशक में अपनी लेखनी के माध्यम कोंकणी समाज को स्वाभिमान का मंत्र दिया। इन्हीं की बदौलत कोंकणी साहित्य आज इतना विकास कर पाया है।

कोंकणी-भाषा-मन्दिर

कोंकणी भाषा का मन्दिर हम अपने हाथों से निर्माण करेंगे
हम अपना पुरुषार्थ कोंकणी भाषा में यशस्वी बनायेंगे

कोंकणी हमारे दिलों की धकधक
कोंकणी में हमारे क्रोध एवं सुख के भाव
स्वाभिमान की ज्योती नसों मे रखेंगे प्रज्वलित

कोंकणी नाचती है 'फुगडी' और 'धालो'
तियात्र नाटक एवं जागरण 'कालो'
संस्कृति की धरोहर कोंकणी
विकसित करेंगे हम सहजता के साथ

ईश्वर का अनुग्रह, दिलों का आयना
अंजुली भर पानी हमारी प्यास के लिए
कोंकणी भाषा में अनुग्रह माँगकर
ईश्वर से करेंगे वार्तालाप कोंकणी से

कोंकणी भाषा प्रतिष्ठा जीवन की
कोंकणी शब्द हीरे जवाहर
एक से बढ़कर एक सजाकर
शृंगार करेंगे कोंकणी माँ का

अपनी कोंकणी माता को
गर माने कोई कम
उसे मानकर अत्याचार
चटायेंगे चूरन।
❑❑❑

नागदेव

निरुपद्रवी की तरह बैठा था शांत
नागदेव आकर
अपना फन फैलाकर
करने लगा सावधान

हे मनुष्य, यदि मैं रहता चुप
तो सब मानते हैं मुझे तुच्छ
और इस अवस्था में
सोचते हैं मुझे मारना।

मैं यदि फुफकारता हूँ तो
पासवाले एवं दूरवाले
थर थर उठते हैं काँप
लल्लू-पंजू प्राणि कहते हैं :-
लोगो, मत छेड़ो इसे
नष्ट कर देगा सभी को यह

मैंने पूछा :- नागदेव, लोग तुमसे भयभीत हैं
या तुम्हारे विष से?
उसने कहा :- वे मेरे अस्तित्व से ही डरते हैं
प्रतीक हूँ मैं ही मनुष्य के मन का।

नागदेव ने आगे बताया :- हे मनुष्य, जाओ और
देश की सीमा पर, दूरदर्शन एवं
इन्टरनेट के ज़रिए प्रकट करो कि
मैं क्रोध से फुत्कारता हुआ
हो गया हूँ लाल।

समस्त संसार ही
हो जाएगा व्याकुल
पहले ही फुत्कार पर।

मैंने कहा :- नागदेव, मुझे मिल गया संदेश तुम्हारा
और तुम्हारे जीवन का
मैं उठकर चलने लगा

अब मुझे न होगा आश्चर्य
अगर लोग मेरे पाँव पडेंगे
मुझे मानकर नागदेव।
❑❑❑

देखते देखते

देखते देखते
सब कुछ ऐसे छोटा बन गया
कि हाथ में समाता गया
बन गई है पृथ्वी एक घोंसला
विशाल ब्रह्मांड बन गया है गाँव.........

देखता हूँ मैं
बड़े बड़े हिंस्र जानवर
बच्चों के छोटे छोटे खिलौनों जैसे
आकाश को छूनेवाले
झाड़ों और पेड़ों के बोनसाय जैसे----

मैं कहता हूँ, जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ
मनुष्य भी बौना बनकर
अपने सिर के अंदर
नहीं रख सकता
मुर्गे का छोटा सा दिमाग ।
❑❑❑

मछली की टंकी

मैंने मछली की एक टंकी खरीदकर
रखी है अपने घर की बैठक में
मछलियाँ हैं उसमें तरह तरह के गुणोंवाली–
सोने की, रूपे की, जामुनीं, नीले रंगवाली।
समान हैं सभी मछलियाँ
अंदर ही अंदर रहती तैरती।

इस पारदर्शक मछलियों की टंकी में
प्रकाश के आते ही अंदर की
मछलियों का संसार कितना
भयरहित एवं निष्कलंक, मद, मात्सर्य रहित,
बहते झरने के जैसा गतिशील
पुराने जीवन को वहीं छोड़कर
अपनानेवाला नये जीवन को।

इस प्रकाश भरे टंकी की मछलियों को
देखता रहता हूँ और देखते देखते मन से
हो जाता विलीन उसमें
बन जाता हूँ अंदर की मछलियाँ
फिर रंग बिरंगी मछलियों के रूप में
मन–ब्रह्मांड में लीन होकर तैरते तैरते
आनंद का अनुभव करते करते
साक्षात्कार करता स्वर्ग–सुख का।

❑❑❑

मानव से प्रश्न

मानव, तुमने देखा कभी आसमान?
जिसमें भरा है आश्चर्य ब्रह्मांड का
ग्रह, नक्षत्र, विवर, आकाशगंगा
चलाते हैं अपना अपना शासन
जहाँ हमारी पृथ्वी भी पडी है
उनसे नाता जोड़कर ।

मानव तूने कभी देखी वर्षा?
पृथ्वी पर विकसित करती हुई जीवन को
व्यक्त करती हुई सृजन के अपने भावों को
स्वतंत्र मन से सभी ओर से
फैलाते हुए भविष्य का प्रकाश
विकसित करती है रस वैभव पृथ्वी का।

मानव कभी पेड़ों को देखा है तुमने?
अपनी जडों को पृथ्वी में गाड कर खडे हैं सीधे
स्वाद लेकर तरह तरह के माधुर्य का
खट्टे, मीठे, कसैले फलों को सहज ही मिलाकर
ले आते हैं जीवन में निरंतर स्वाद।

मानव तूने कभी खिलता हुआ फूल देखा ?
प्रतीक, निर्मलता और शुद्धता का
फूलता रहता है जो सुगंध से
स्रष्टा के पैरों पर अर्पित हो सात्विकता से
मानता है उसीकी सार्थकता जीवनकी।

मानव देखा कभी अपनी मृत्यु को?
जो चोर बनकर साथ साथ चलती रहती
निष्ठा से देती है तुम्हारा सांथ, बदले में कुछ नहीं चाहती
हँसती या रोती सिर्फ तेरे कर्मों को देख
और छोड़ जाती है यादें दूसरों के लिए

मानव तूने देखा कभी ईश्वर को
जो तेरे भीतर रहता है तटस्थ होकर
बन कर श्वास, दिल की सजाकर बाती
चलने घूमने का साथी और
ज़रूरत में हमें उठाता भी।

मानव मैं जानता हूँ, यह सोचने के लिए
तेरे पास समय नहीं है, कारण तू स्वयं को नहीं जानता,
नहीं है तुझको अपनी ही पहचान
तेरा जीवन अर्थरहित है, तू क्या जाने
ईश्वर ने भेंट किया है, उनके साथ रहने के लिए
ईश्वर से मिली जो जिंदगी साथ रहने
बनकर उसीका अंश, उपभोगे शाश्वत उसीका प्राकृतिक वैभव।

❑❑❑

मानव-युद्ध

मेरी दृष्टि 'वसुधैव कुटुंबकम्' की...
दूसरे मनुष्य का अंत करने
राक्षसीपन का यह खेल
मानव ने क्यों है रचाया?

मानवता की सरहदों पर, पृथ्वी की पीठ पर जहाँ तहाँ
दिन-ब-दिन अर्थहीन संचयन हो रहा है
मुर्दों का इधर और उधर!

ये मरे पड़े अनजान लोग
एक दूसरे के दुश्मन हैं? या मित्र?
ये तो बलि बन चुके
मनुष्यकी ही विचारधारा के।

इस प्रकार दो देशों के बीच की सरहदें
आग की भट्ठी हो जाती है
मैं मनुष्य घायल होकर
सरहदों के इस ओर और उस ओर रहकर
मरते रहते हैं एक समान!

मुझ जैसा एक मनुष्य है जब मरता
उनके परिवारवालों पर आ जाती है विपत्ति
उनके रिश्तेदारों पर, गाँवों पर और देशों पर !
सर्वेश्वर, पृथ्वी के सभी धर्मों के मुखों से
उन्होंने दिया है केवल एक ही सार, एक ही तत्व -
''एक मनुष्य को चाहिए कि दूसरे की तरफ अपना हाथ बढ़ाए''

फिर भी युगों से काल को लाँघकर
मनुष्य घिनौने व्यवहार से
दूर करता है मनुष्य को
दुसरे मनुष्यसे।

यात्रा मानव की आत्मज्ञान की
पारदर्शक दृष्टि रखनेवाले
दिव्य मनुष्य को
साकार करने की,
मनुष्यों के बिच में हो नाता
कृतार्थता, साक्षात्कार दिव्य जीवन का
चिरस्थायी आविष्कार,
बनाने इस पृथ्वी को ही
'वसुधैव कुटुंबकम्'
❑❑❑

सुनामी लहरों का प्रलय

झुनझुनाती हुई चींटियों की बाँबी पर
घड़ा भर पानी फेंकने पर
सारी चींटियाँ बाँबी के साथ
इधर उधर होकर नष्ट हो जाती हैं।
वैसे ही आ गईं जीवन लेनेवाली सुनामी की लहरें
जीवों को, चींटियों को, सभी को बहाकर ले गई ।

प्रलयरूपी नाशकारी सुनामी लहरें जब आईं
होकर भूकंप सागर के अधोतल में विपत्ति लेकर
चलीं धारण करके उग्र रूप विनाश का
देश देश की कृत्रिम सीमाएँ बहाकर
मानव-संस्कृति के बड़प्पन का
कोई भी चिह्न शेष न रखते हुए

क्षणिक जीवन लेकर चलनेवाले मनुष्यों के सामने
प्रकृति की लीला का यह रहस्य
उन्हें उलट पलट कर गया,
कोई शब्द नहीं, मुक्ति भी नहीं
ब्रह्मात्मा के पैर अग्रसर होते गये
उत्क्रांति की प्रक्रिया पर
आदि शक्ती सृष्टि के मूल की, उत्पत्ति की

□□□

निश्चय या निर्धार?

निर्धार से ही बहती
कालप्रवाह की गति निरंतर
निर्धार से ही फूलती फलती
भविष्यभेदी प्रज्ञा।

गहरे अंधकार को उखाड़ फेंकता है निर्धार
निर्धार परत कर देती लुप्त
निर्धार ही वज्र बनकर
वर के रूप में होता है शोभित

निर्धार का ध्वज ही लहराता दिगंत में
मन–इच्छाओं के, हिमालय का
प्रकाश–मधुर अंकुर उगाता है निर्धार
अग्नि दिव्य के यथार्थ का

निर्धार ही चितार पाता चिरस्थायी चित्र को,
दूरदर्शिता की नूतनता का
भविष्य में घटित होनेवाली घटनाओं का
निर्धार ही बनता गवाह।

❑❑❑

इसापनीति का कुआँ और मेंढक

इसापनीति के कुएँ का
उसमें रहनेवाले मेंढ़क का जीवन आज तक
भाग्य से फलनेवाला बना रहा!

इसलिए जिसे देखो वह
जीने की सोचते हैं, कुएँ के मेंढ़क की तरह
कुएँ को 'विश्वरूप' मानते हुए।

इस प्रकार जीनेवालों को क्यों न माने?
इसापनीति के कुएँ के मेंढ़क के भाईबंद?

जो संकुचित वृत्ति से अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर
लज्जा के बिना स्वयं अपनी कीर्ति फैलाता
अपने को 'समाज-सुधारक', 'जग-उद्धारक', या
'जगद्गुरु' कहता रहता।

यह काईदार, कूडे कर्कट से युक्त
जीनेवाला कुआँ और उसका मेंढ़क
सुधार के चिह्न नहीं कहे जा सकते।

अब एक ही उपाय है
कुएँ के अंदर विस्फोट करते हुए
कुएँ को ही नष्ट कर दो
उससे उछलते ज्वार को
मुक्त रूप से बहने दें...

❑❑❑

तीर्थस्थान वसुधैव कुटुम्बकम्

दीवार पर टंगी है
तीर्थस्थान की पुरानी फोटो
आदि माया के उत्सव में
जमा हुए लोगों के भीड़ की ।

उस मूल स्थान पर पौ फट गई
सांस्कृतिक नवोत्थान की
एक एक मानव का जन्म हुआ
मनुष्य का खजाना ही प्रकट हुआ ।
और खड़ा है यह तीर्थस्थान
मन्दिर में प्रतिष्ठित करके
आदिमाया की यह मूरत ।

तब से लेकर मानव की एक ही आस
नतमस्तक होने की
आदिमाया के पैरों पर
उन्ही के द्वारा नाता जोडने की
परमशक्ति परमात्मा से।

इस पुरानी फोटो के
भिन्न जाति-धर्म के लाखों लोग
कभी के मर चुके
फिर भी उस भीड़ की
चहल कदमी आज भी जारी है...।

भिन्न जाति-धर्म के लोगों के
बहते हुए खून में मिली हुई
उच्च नीच के विचारों की समज
आज भी होती रही है ।

आदिमाया को साक्षी बनाकर
चलते हैं इस तीर्थस्थान में
आध्यात्मिक सत्संग और प्रवचन
सत्पुरुषों के, सिद्ध पुरुषों के
कि सब का हो कल्याण ।

मुझे आश्चर्य होता है कि
ये सत्पुरुष, सिद्धपुरुष जो
भिन्न जाति-धर्मवाले लोगों की
उच्च नीच की भावना न रहे
इसके लिए कुछ करते ही नहीं, कुछ कहते ही नहीं।

लेकिन बड़ाई हाँकतें हैं ये
मानव-जाति की एकता की
कहते हैं, सर्व शक्तिमान ईश्वर की शरण लें
बिना भेदभाव के विनयान्वित हो
उनसे एकाकार हो जायें ।

मुझे लगता है कि इस तीर्थस्थान पर
नया अवतार आएगा
नये काल के, नये विचारों के सिद्धपुरुष का
जो भिन्न जाति-धर्म के लोगों को
उनके उच्च नीचत्व के दरिद्र विचारों को
अपने तेज में विलीन करते हुए
प्रत्येक जाति-धर्म के मानव को
एकता के स्वाभिमान से
समानता की पटरी पर लाकर
मनुष्य-जाति के कल्याण के
नये सिद्धांत का प्रचार करेगा
एक धर्म : मानव-धर्म
एक जात : मानव- जात

फिर मैं इस तीर्थ-स्थान की भीड़ की
नई फोटो खींच कर
नई पीढी के धर धर में लटकाऊँगा
इस शीर्षक के साथ
'तीर्थस्थान वसुधैव कुटुम्बकम्'
❑❑❑

ईश्वर से संवाद

कुम्हार माटी को लेकर अपने हाथ से
दिल लगाकर दिया बनाता रहता है,
जिससे उत्पन्न होता है, प्रकाश निर्मल एवं सात्विक
उसी प्रकार स्वयं बड़ा सा चैतन्य-स्वरूपी
ब्रह्मांड को बनानेवाले हाथ, तुम्हारे अलावा और
किस शक्तिमान के होंगे?

यह ब्रह्मांड निखिल सुखों का आगर
जिसे भोगकर तुम जी रहे हो!
तुम्हारा साथ, तुम्हारी श्रद्धा
जिनके अंत:करण को स्पर्श न करते हुए
अंदर से अकेला और खोखला
जीवन बिताकर मर जाते हैं
इस प्रकार के लोगों के उत्कर्ष के लिए
हे ईश्वर! कोई क्या कर सकता है?

शरीर पर प्रांत, पंथ, धर्म के
आभूषण शोभित हैं, मतलब का यह धर्मात्मा
अपनी तुरही के नाद में फंसे रहकर
अपने कूडे, कचरे को मंत्रमुग्ध करके
नाद को शक्ति प्रदान करता है
तुम्हारे निर्माण को कैसे समझेगा?
हे ईश्वर! समान तत्वों के स्रोत
तुमने इस ब्रह्मांड का निर्माण किया
आयने के समान पारदर्शक, सत्यप्रदर्शक
उतनी ही पारदर्शकता से
उसमें भी कोई ब्रह्मस्वरूप बन जाये ऐसा।
धर्मसंस्थापकों ने तुम्हें दिखाने की दूकानें खोलकर
मनुष्य मनुष्य को अलग करने को अनेक धर्म बनाए
अपने स्वार्थ के लिए, हे ईश्वर! उसके स्वार्थ का अतिरेक
नहीं तो और क्या है?

❑❑❑

मेरा प्रवास चिरंतन की राह से

मेरा प्रवास शुरू हुआ
चिरंतन की राह से होकर
उष:काल की झिलमिलाहट में
यात्रा की कामयाबी के लिए।

तारे मुझे विदाई का संदेश देते हैं
टिमटिमाते हुए पीछे से...
प्रकाश में मिलकर जाते हैं।

सूर्य आगे बढ़ता
रास्ते पर फैलनेवाले उमंग देकर
कोमल किरणें लचकदार और
चलती हैं टोली बनकर
पीछे से मेरी लंबी छाया छोड़कर
मैं आगे की ओर चलता रहता हूँ।

प्रसन्नता के साथ मेरे स्वागत के लिए
प्रकृति प्रशोभित करती है, दृश्य एक के बाद एक
चिडियाँ लयबद्ध स्वर में
अपने मधुर गायन से
प्रदेशों को मधुर बनाती हैं।
अभिभूत करती आसानी से
अपनी आत्मीयता के साथ साथ

सूर्य रूपी तपस्वी अपनी मंत्र-किरणें फैलाता है
ऊपर की ओर उठते उठते वह ब्रह्मांड को उज्ज्वल करता है
और मेरी छाया छोटी छोटी करता है।

दोपहर के होते होते
सूर्य मुझे अपनी बगल में लिये
मेरे पैरों के नीचे की छाया को बहुत छोटी बनाकर।
ऐसे समय पर मुझे लगता है कि
मैं ही स्वयं सूर्य बन गया हूँ।

अब सूर्य धीरे धीरे मेरे आगे चलकर
अपनी छाया मेरी पीठ पीछे लगाता है
मेरे प्रवास को अखंडित बनाते हुए
जो छाया अब मेरे पीठ पीछे है
वह सूर्य की ही है
संध्या होते होते वह लंबी होती है
सहज ही मुझमें मिलकर नष्ट होने तक

अब मैं ऐसे मुकाम पर पहुँचता हूँ
जहाँ पर अंधकार के साम्राज्य की होती है शुरूआत
जहाँ पर सतर्क रहते हैं मेरे स्वागत के लिए
नक्षत्रों के गुच्छे मुझे राह दिखाकर
मेरी यात्रा ज्यादा सुखपूर्ण रहेगी, ऐसा कहते हुए
अंधकार के यज्ञ से प्रकाश की सिद्धिरूपी समाधि तक।

❑❑❑

मातृत्व की तृप्ति

श्रावण छान लेता है स्वरों की ध्वनियाँ
स्वतंत्र धूप के रंग का प्रपात
झाड़ियों के खुले केशों की फुहार
भर जाता है आकाश की अंजली ।

नूतन फसल की ओढ़े शाल
संतुष्ट धरती करती है शृंगार
धन धान्य के सौभाग्य से
अन्नपूर्णा की गोद है संपन्न

मनपसंद रंगीली घनी मेहँदी
मखमली बहुत ही सुंदर
खुले आकाश के आलिंगन में धरती
भोगती है तृप्ति मातृत्व की ।

❑❑❑

हे ईश्वर! तुम्हारा ध्यान करते समय

आँखों सामने सुप्त पड़ी झिलमिलाहट
अदृष्ट के रंगीले परदे
ब्रह्मांड के चारों ओर चक्कर हैं काटते
सतरंगी गोल गोल अंगीठी
तुम्हारा ध्यान करते वक्त हे ईश्वर!

दिल में गहरा है उतरता
करुणा का शांत महासागर
मानवता की वेदना ध्वनि
भीतर से विश्व भर में झंकारती
तुम्हारा ध्यान करते समय हे ईश्वर!

आँखों के सामने वैभव परमार्थ का
नित्य, सनातन, चिरंजीवी
स्थिति लय से होकर नवनिर्माण की
क्रिडा तुम्हारे प्राणों की
तुम्हारा ध्यान करते समय हे ईश्वर!

❑❑❑

शबरि-मला अय्यप्पा

आदि बीज रूप प्रत्यक्ष जैसे
अय्यप्पा का शबरि–मला का धाम
ब्रह्मरूपी ज्योत कृपा की
स्वर्ग सुख का अखण्ड सत्य ।

इस धाम का अनुग्रह बड़ा
उसके योग्य ब्रह्मांड वेदी
आत्मतेज से अणु रेणु बनकर
आदि अंत का वेष्टन करता है ।

पुण्य उनके दर्शन मिलता
रहस्यजीवन की सहज सिद्धि
हे अय्यप्पा ! तुम्हारे ध्यान मैं हूं खड़ा
साक्षात् आकर तुम तिलक लगाते हो।
❑❑❑

हे ईश्वर, तुम्हारा प्रेम

हे ईश्वर, तुमसे प्रेम हो गया
मिलती है समाधि ध्यान से
होता जीवन की कठिनाइयों का अंत।

जहाँ जाता हूँ तुं दिखाई देता
तुम्हारे अस्तित्व का ही अनुभव होता है
गुदगुदी से हँसा कर
मारते हैं। माया की लाठी

चलते फिरते ध्यान तुम्हारा
निरंतर काम में रहने पर
माता जैसे करती याद
अपने नन्हों की

अब ज्यादा, कम, कुछ नहीं
केवल मुक्त अनंतता ही
इस पार और उस पार
नहीं किसी प्रकार की भिन्नता।

❑❑❑

एक ही जन्म से मालूम होता है

हे ईश्वर ! एक ही जन्म से मालूम होता है
कितना ही जन्म जीता रहा
तुम्हारी कृपा होने से
मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया।

माँगने से पहले
तुमने भरपूर दे दिया
सब शुद्ध कंचन
जीवन को भी बनाया कंचन।

चराचर से गोचर होकर
उत्क्रांतित तुम्ही दिव्यात्मा
शाश्वत काल से नाता जोड़ने
तेज से विस्तृत होती मेरी आत्मा।

❑❑❑

वैभवपूर्ण पृथ्वी

वैभवपूर्ण पृथ्वी चिरयौवना
अंदर ही अंदर साधना में रत
उत्पत्ति के स्थिति लय से
विनाशवंत नवनिर्माण में

काजल काले केशों पर लगा कर
तेजपूर्ण नक्षत्रों की वेणी
विराट छाया आकाशगंगा में
लाती है चैतन्य का प्रकाश

मुक्त निष्पाप बालक सी
चक्कर काटती आंगन में आकाश के
उड़ती तैरती मनस्वी
जीवन–तत्व संजोती कोख में।
❑❑❑

पीपल का पौधा

सबेरे बगीचे में सींचते समय
देखा मैंने छोटे से गमले में
पनप रहा पीपल का पौधा।

मैं आश्चर्यचकित होकर
देखता ही रह गया
छोटे से पौधे को, जिसकी जड़ों में
अनंतकाल की देन है
सृजन विकास की ।

इस पौधे को देखते समय
आँखों के सामने साकार होने लगा
महावृक्ष पीपल
अपनी जड़ें फैलाकर शक्ति से
दशों दिशाओं को पास ला रहा।

मैंने इस पौधे को प्यार से सहलाते हुए कहा :
तुम्हारे दर्शन से मेरा अंत:करण
हुआ आकाश जैसा विस्तृत
हुआ मैं धन्य
कि मेरे बगीचे में लिया तुमने जन्म।

मैंने तुम्हें कुंडे सहित उठाया
प्रतिस्थापना करने के लिए
मंदिर के प्रांगण में
जहाँ तुम काल की महिमा को गाते हुए
होते विकसित दिगंत में
देते रहो छाया
मनुष्य कुल को अखंडता से
शाश्वत जड़ों को मजबुत बनाते हुए।
❑❑❑

अब प्रकाश फैल गया है

पुराना वहीं छोड़कर
भविष्य की ओर दृष्टि रखते हुए
सूर्य ने आकाश का किया आलिंगन
और प्रकाश फैल गया ।

प्रकाश से तालाब भरा
तैरता उस पर चित्त कोमल
उजाले का मंत्र है बताता
प्रकाश से बीते प्रकाश को।

रंगीली परत प्रकाश की
उस पर चिड़ियों का झुंड
तोता, मयूर की ध्यानपूर्ण दृष्टि
अपना ही देती संकेत देती रहती है।

आज मेरा भाग्य जगा
काल-खंड को कूदता
हे ईश्वर ! यह तुम्हारी ही लीला है
तुम्हारे साथ साथ चलने की ।

❑❑❑

धर्मस्थान मनुष्यत्व का

धरती पर रूप लेने के लिए
मेरे अंदर साकार हो उठा
धर्मस्थान मनुष्यत्व का
जिसमें संसार भर के मनुष्यत्व के भूखे मानव
मनुष्य बन कर एक हो जाएँगे
देने के लिए नया आयाम, नया अर्थ मनुष्यत्व को ।

यह विस्तृत धर्मस्थान खुला रहेगा
बिना द्वारों, दीवारों के
चराचर में ऋतुचैतन्य फैलानेवाले सूर्य अधिपति होंगे यहाँ
अपने सुवर्णाग्नि के ध्यान में मग्न
निर्मल मन से सबको प्रकाशित करते हुए
सृजन-सुगंध समझदारी का
जिसमें प्रकट होगा महोत्सव अनश्वर काल का ।

इस धर्मस्थान के नियम-निर्माण में
लग जाएँगे संसार भर के धर्म-धर्म के नेता
मनुष्यत्व के पुजारी
निश्चित करने के लिए मनुष्य जाति के
उत्कर्ष के आदर्श
चर्चा परिसंवाद के ज़रिए
धर्माधर्म के, रीति-रिवाज़ों, पंथों के
संमिश्रण से समन्वय के लिए ।

यहाँ चलेगा तर्क-वितर्क :
- जो मनुष्य दूसरों को अपने समान नहीं मानता
वह कैसा मनुष्य है, अपूर्ण, भू का भार ?
- धर्म-नेता मानव मानव के बीच
जाति-पाँति, गोत्र-पंथ के वर्ग बनाकर

उनका दल बनाता
तो वह कैसा धर्म-नेता, अधर्म?
उसका धर्म कैसा, अधकच्चा?

नहीं जानते ये नेता-लोग धर्मों का मूल स्रोत
देव-धर्म के नाम पर ये एक दूसरे को करते हैं अलग
नहीं जानते ये कि यह ब्रह्मांड-निर्माता का अपमान है
धर्म के प्रतीक एवं आभूषण पहनकर
देव-धर्म के नाम पर चारुता दिखाने का उनको क्या हक है ?
इन फालतू धर्माधिपतियों का मतलबी धर्म
कैसे कर सकता है रक्षा मनुष्यता की?

इस धर्मस्थान पर उदित होंगे भक्तिभावना में डूबे हुए
चाहत भरे एक एक भाग्य-दिन का
जहाँ ब्रह्मांड-निर्माता द्वारा व्याप्त
अलौकिक ईश्वरीय उजाले के ध्यान से तद्रूप होकर
अपने अस्तित्व-सहित दिव्य विचार-सरणी को प्रकाशमान करके
हर एक मानव दूसरे में देख लेगा अपना ही अस्तित्व
दूसरे के दिल में देख लेगा अपना ही प्रतिबिंब ।

यह धर्मस्थान केंद्रबिंदु होगा अनंतता का
कृतार्थ मानवजीवन के आदर्शका
उसके संपर्क में आकर मानव होगा
परिपूर्ण, जागृत, प्रकाश से भरे घड़े जैसा
अपने ही प्रभाव से
आसपास के अज्ञान के संकुचित विचारों की यवनिकाएँ
सरासर उखाड़ फेंकेगा
योगसिद्धि की शांत परिपूर्णता की
ईश्वरी-संकेत के ज्ञानोदय के साथ ।
❑❑❑

माँग ब्रह्मांड राजा से

क्षण क्षण हे ब्रह्मांड राजा तुम्हारा ही राज होगा
राष्ट्रों की सीमाएँ तोड़कर मुक्त विचार बहेंगे

पृथ्वी की भौतिक प्रगति के संग आत्मिक
जन आविष्कार तुम्हारे प्रतीक का साकार करेंगे

मानवता उमड़कर नये नाते बनेंगे
संसार भर की मानव-राशी एक ही धागे में गुँथेगी

राष्ट्र बनेंगे धर्मस्थल भक्ति के अंकुर बनकर
मानव-उत्कर्ष की चर्चा वहाँ पर नित्य चलती रहेगी

निर्माण का स्रोत तेरा आसानी से उग कर खिलेगा
आतंक, युद्ध, विश्वासघात के दुष्टाचार खतम होंगे

दिव्यता की तुम्हारी किरणें संसार भर फैलेंगी
चिरंतन सत्य की खोज के लिए दिल भर जाएँगे ।
❑❑❑

डॉ. एस. एस. कुलकर्णी (1932–2016) की जीवनी–संबंधी सामग्री

डॉ. एस. एस. कुलकर्णी (जन्म 5 अगस्त 1932) ने अपनी शिक्षा कर्नाटक में कोटुमछगी, गडग, नारेगल, धारवार एवं बंबई में की। वे मुंबई विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में सेवार्थ ई. 1969 में शामिल हो गए और गोवा केंद्र में काम करते समय अंग्रेज़ी के प्रभारी व्याख्याता के रूप में मुंबई निश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर एवं शोध–विभाग, पणजी, गोवा केंद्र में नियुक्त किए गए। गोवा केंद्र में काम करते समय उन्होंने अपना पी एच.डी का शोध–प्रबंध तैयार किया। विषय था 'श्री अरविंद घोष के काव्य में नाटकीय तत्व' मुंबई विश्वविद्यालय ने उन्हें 1982 में पी एच.डी की उपाधि प्रदान की। गोवा विश्वविद्यालय में वे अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष रहे थे । ई. 1993 तक वे इस विभाग में रीडर की पदवी पर काम करते रहे। ई. 1957 से 1993 तक बिए, एम. ए, एम फिल्, पी एचच डी के स्तर पर वे पढ़ाते थे। ई. 1993 से लेकर वे पोस्ट डॉक्टरल शोध के निर्देशक बने रहे।

अंग्रेज़ी एवं कन्नड में लिखी गई अरविन्द की कविता एवं नाटक और टागोर पर लिखे शोधपत्रों के अलावा कुलकर्णी ने गोकाक पर अंग्रेज़ी कवि एवं शिक्षक के रूप में समीक्षात्मक लेख तैयार किए। कवि के रूप में डी. आर बेंद्रे पर समीक्षात्मक लेख तैयार किए। साहित्य अकादमी के भारतीय साहित्य से संबंधित संग्रह के लिए इन्होंने अपना योगदान किया। कोंकणी के प्रतिनिधि कवि, बी. बी. बोरकार, प्रकाश पाडगांवकार, रमेश वेळुस्कार, नागेश करमली आदि के द्वारा लिखी गई कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद भी तैयार किया।

श्री अरविन्द और माताजी के संपूर्ण योग एवं दर्शन पर कन्नड और अंग्रेज़ी में भाषण देने के कई संदर्भ डॉ. कुलकर्णी को मिले। **सावित्री** ('सावित्री सप्ताह') पर विभिन्न केंद्रों में उन्होंने हफ्तों तक चलनेवाले भाषण तैयार किए। थियॉसाफिकल सोसाईटी जैसे धारवार, दंडेली, सहकार, मुंबई, सूरत, गुजरात, अरविन्दाश्रम, दिल्ली आदि समाज–केंद्रों में भाषण दिए।

सावित्री पर गोवा विश्वविद्यालय में उनके निर्देशन में पीएच.डी के लिए शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया गया जिसे भारत के भविष्यसूचक साहित्य का आदर्श माना जा सकता है।

गोवा के अरविंद शोध-सेल के तत्वावधान में डॉ. कुलकर्णी का शोध-कार्य निरंतर चलता रहा। पोस्ट डॉक्टरल शोध में शोध-निबंध एवं शोध-प्रबंध तैयार करने और प्रकाशित करनें में उन्होंने निर्देशन दिया। उनके पोणडिच्चेरी में जाने के बाद भी 2003-2005 तक शोधकार्य चलता रहा। इस समय भी उन्होंने साहित्य पर कन्नड़ में पाक्षिक भाषण प्रस्तुत किए।

प्रकाशित लेख

- श्री अरविंद के नाटक - अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन-एक परिदृश्य, सं. एन. के. नायक, आक्सफोर्ड यूनिवेर्सिटी प्रेस,1978
- अरविंद के नाटक - एक अध्ययन , प्रकाशक- राजहंस वितरण, पणजी, गोवा, 1993
- सनातन धर्म एवं अरविंद के इस भूमि पर दिव्य जीवन के संबंध में विचार, त्रैमासिक, 'एडवेंट', संपादक, समीरकांत गुप्त, प्रकाशक- अरविंदाश्रम प्रकाशन विभाग, पॉण्डिच्चेरी, भाग-64, नं.1 फरवरी 2007.

डॉ. एल. सुनीताबाय

(1944–2018)

शिक्षा : बी. ए. (संस्कृत), एम. ए. (हिन्दी), पीएच. डी. सन् 1966 से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के शोध में लगी हूई थी। इनके निर्देशन में सोलह शोधप्रबन्ध तैयार किए गए थे। सोलह पुस्तकें और कई शोधपत्र प्रकाशित। ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान एवं भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में विशेष रुचि थी। गत पचीस वर्षों से हिन्दी और कोंकणी के तुलनात्मक अध्ययन में रत थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से शोध के लिए जूनियर रिसर्च फेलोशिप, सीनियर रिसर्च फेलोशिप एवं केरियर एवार्ड प्राप्त । सन 1983 में यू जी सी केरियर एवार्ड के अन्तर्गत इन्होंने कोंकणी-हिन्दी मलयालम कोश तैयार किया। कोश की भूमिका में कोंकणी शब्दावली के विकास के इतिहास का शोधपरक अध्ययन प्रस्तुत। कोचीन विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की सेवा निवृत्त प्रोपसर । ई. 2007 में इन्हें यू. जी. सी. मेजर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त। इसके अन्तर्गत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में हिन्दी और कोंकणी लोकसाहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत। यही अध्ययन अब पुस्तक के रुप में प्रकाशित हुआ है। हिन्दी एवं कोंकणी की मूलभूत एकता एवं कोंकणी भाषा के ऐतिहासिक महत्व को लेकर विशेष शोधकार्य में रत थी।



प्रकाश पाडगांवकर

जन्म : 04 दिसंबर, 1948

- कोंकणी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि।
- काव्य संग्रह : **उजवाडाचीं पावलां** - 1976
  (प्रकाश के पदचिह्न)
- **वास्कोयन** - 1977
  (वास्कोयन)
- **हांव मनीस अश्वत्थामो** - 1985
  (मैं मनुष्य अश्वत्थामा)
- **कविता: काळ रेल्वेच्यो, मन हारशांच्यो, पावसा पाणयाच्यो** - 1993
  (कविता : काल रेलवे की, मन आईने की, बरसात पानी की)
- **सर्ग घडपाक धतरेचो** - 1994
  (स्वर्ग रचने धरती पर)
- **व्हांवती न्हंय काळाची** - 2003
  (बहती नदी काल की)
- **ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो** - 2008
  (चिरंतन ब्रह्मांड-योगी)
- **पुनरार्थोपनिशद** - 2014
  (पुनरार्थोपनिषद)
- **देवाचें चान्नें** - 2016
  (ईश्वर की चाँदनी)

पुरस्कार :

- साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- डॉ. टी. एम. ए. पई फाउंडेशन, मणीपाल
  (उत्कृष्ट कोंकणी पुस्तक पुरस्कार)
- गोवा कला अकादमी पुरस्कार ।
- कोंकणी भाषा मंडल, पुरस्कार।
- गोवा कोंकणी अकादमी का कोंकणी भाषा सेवा एवम् साहित्य पुरस्कार ।
- गोवा राज्य सरकार का सम्मान।
- गोवा राज्य का उत्कृष्ट साहित्य के लिए सांस्कृतिक पुरस्कार।
- फरवरी, 2015 में केरल के कोझीकोड में आयोजित 22 वें अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य संमेलन के अध्यक्ष।
- डॉ. चंद्रलेखा डि सोझा ने धर्मवीर भारती और प्रकाश पाडगांवकर की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय पर, गोवा विश्वविद्यालय में प्रबंध लिखा और पीएच. डी. उपाधि पाई।



ISBN : 978-81-932594-0-5

